15324

॥ ॐ तत्सत् ॥

15324

इश्क़-विनोद

जिसको

साकेतनिवासी—सख्यरसविकासी

श्री १०८ पं० सीताप्रसाद जी

ने

संसार के कल्याणार्थ निर्माण किया

प्रकाशक—

कन्हैयालाल वर्मा

इन्कमटैक्स आफ़िस

बरेली.

द्वितीयवार १०००

सर्वाधिकार सुरक्षितम्

सम्वत् १९८८ वि०

मूल्य सदुपयोग

E 33

❀ ॐ तत्सत् ❀

इश्क़-विनोद

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
15324
अयोध्या

जिसको

साकेतनिवासी—रसिकरसविकासी

श्री १०८ पं० सीताप्रसाद जी

ने

संसार के कल्याणार्थ निर्माण किया

प्रकाशक—

कन्हैयालाल वर्मा

इन्कमटैक्स आफ़िस

बरेली.

द्वितीयवार १००० | सर्वाधिकार सुरक्षितम् सम्वत् १९८८ वि० | मूल्य सदुपयोग

ॐ

इश्क़-विनोद का

शुद्धाशुद्ध-पत्र

नं० पृष्ठ	नं० पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
भूमिका	५	नी	ने
९	१६ आखिरी	है	वै
१०	१	मूढ़	गूढ़
,,	५	कानन	कामन
११	१४	टूट	टूक
,,	२४	मान	प्रान
,,	२४	सीस	षीस
१३	७	करीरन	करोरन
१४	९	कभी	कधी
,,	१६	आलम	आलिम
१५	२२	कस	फस
१६	११	ैल	छैल
१८	३	न	बैन
,,	१०	असीसिरदार	जसीसिरदार
,,	१८	वयन	नयन

नं० पृष्ठ	नं० पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	२	हा	ही
,,	५	कहि	कढि
,,	१४	पार	पीर
,,	१७	नार	नीर
,,	१४	द	सीयप्रसाद
२०	१	नरंग	तरंग
२१	४	प्रिय सखा	प्रियसखसखा
,,	७	प्रमो	प्रमोदाक्या
,,	२४	नाहा	नाहीं
२३	५	हरसि	हरषि
२४	१७–१८	१२५वें पद्य की आखिरी लाइन	
	पीपीकरि	संतोषधोरता	इमरतधार अघटरससार
,,	२१	लेक	लोक
२५	१९	वनेके करतार	बने करतार
२६	१५	ननमाहीं	तब
,,	२२	पापिन	पाजिन
२७	३	संगा	सानी
,,	६	संचारि	संचरन
,,	९	भलक	झलक

नं० पृष्ठ	नं० पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७	१०	सर	सैर
,,	१८	अवल	अचल
२८	२	सलोने	लोने
२९	१४	गरजोला	गरवीला
३०	७	प्यारो	प्यारे
३१	१३	क	के
३२	१	य	या
,,	३	राम	रास
,,	६	वदन	वदनकी
,,	१७	मे	से
,,	१८	को सोन है	सो कोन है
,,	२०	तारन	तीरन
३३	६	प्रयाग	प्रयोग
३४	१०	जिन	जिनके
३५	१६	वनिजत्रब	बनिजबा
,,	१९	कढ़त	कटत न
,,	२०	वे	बेचि
,,	२४	बढ़ा	बढ़त
३६	१७	दीन	दीप
,,	१८	सेख	सेस
३९	३	तखत	वखत

नं० पृष्ठ	नं० पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९	३	क	का
,,	२३	संसाना	हँसाना
४१	२१	के	ह्वै
,,	२४	जकन	जनक
४२	३	नपाल	नृपाल
,,	८	आप	आय
,,	१५	सवन है	सावन आवत है
४३	१६	ता	ताहि
,,	२४	ह्याखि	ह्याखिल
४५	१०	गारा	गोरा
४६	१०	मौर	मेरा
,,	,,	सिर	बिसर
,,	,,	झकि	उझकि
,,	२०	भय	भैया
४७	९	धान	ध्यान
,,	१८	छन	छनयक
४८	१८	कजक	कछुक
४८	१९	दोहा—	

सरजू तट साकेत लखि कुंजमहिल निज धाम ।
सियप्रसाद पूरन कियो इस्कबिनोद ललाम ॥

—०—

भूमिका

भद्र पुरुष पाठको ! इस असार संसार में प्रायः जितने महा पुरुष महान् आत्मा संसार तथा आत्मोद्धार के निमित्त प्रगट होते आये हैं–वे कृपा करके निज अनुभवों को साधारण-तथा जिज्ञासुओं के मार्ग प्रदर्शन व हित के लिये व प्रेमी सज्जनों के कल्याण के लिये—इसी प्रकार अपनी अनुभव गुदड़ी से निकाल कर देते रहे हैं। हमारे परिव्राजक परमहंस श्री १०८ सीता प्रसाद जी का यह ग्रन्थ एक अमूल्य रत्न है जो मैं आप सज्जनों को भेंट करता हूं। इसके छपवाने का अनुमोदन उनकी शिष्या जानकी बाई उर्फ़ प्रेमकला ने मुझ से किया था। इन ने महाराज की पूर्ण सेवा अन्त समय तक श्री अयोध्या जी में वास करके की। किताब और जीवनी के मिलने में मुझको श्री रामानन्दीय वैष्णव साधू विनीत नये सखा हनुमान शरण जी अवध वासी से बड़ी सहायता मिली। महाराज की जीवनी श्री बाई मन्नू महाराज के कर-कमलों की लिखी हुई है। इसके लिये मैं इन सज्जनों को धन्यवाद देता हूं। यदि पाठकगण इस ग्रंथ से लाभ उठावें तो ब्रह्मलीन महात्माजी का प्रयत्न सफलीभूत होगा।

निवेदक दास—

कन्हैयालाल वर्मा

श्री १०८ पं० सीताप्रसाद जी ।

श्री जानकीवल्लभो विजयते

जीवनी

हे प्रिय पाठको, यहाँ पर थोड़ा सा अपने परम गुरू सब सुखरासी अवध विलासी मध्यकुल प्रकासी सख्य रस विकासी साकेत निवासी छत्रपुराधीश राजगुरू श्री १०८ परमहंस परिव्राजक महाराज पं० श्री सीताऽसाद जू के परम पावन परिचय देना अवश्य है। क्यों कि श्री गोसाईं जी का प्रमाणिक प्रमाण है :—

रूप विशेष नाम बिन जाने। करतल गत न परत पहिचाने।
सुमिरिय नाम रूप बिन देखे। आवत हृदय सनेह विशेखे॥

यद्यपि महाराज जू अपने महत्त्व को फणि--मणि की भांति गुप्त रखते थे परन्तु दिन-मणि की प्रभा बादलों से कहाँ तक छिप सकती है। अनेक भाग्यवान् भक्तों को अपने भक्ति भावना दर्शन से पवित्र जीवन मुक्ति दिये। हाय! शोक है कि इनको चैतन्यता हम अभागों के नेत्रों से लुप्त होगई है। केवल चित्र और चरित्र हाथ रहगया। श्रीमान् का जन्म सम्वत् १९०१ ज्येष्ठ शुक्ल ११ एकादशी रविवार मध्यान्ह हस्त नक्षत्र तदनुसार अन्त समय सम्वत् १९८२ चैत्र कृष्ण पंचमी सोमवार प्रातः अपना परम रूप सच्चिदानन्द चिन्मय होते भये। आप सुप्रसिद्ध अमेठी स्थान के पण्डेमान्वय वंशधारी सरयूपारीण स्वर

शास्त्राधिकारी पिता श्री पं० ध्यानानन्द जी माता श्रीमती सरयूदेवी जी के पवित्रोदर से प्रगट हुये। बचपन ही से अनेक तीर्थाटन कर श्री अवध श्री १०८ युगुलानन्यशरण जी के समीपस्थ हो पठन पाठनादि व्यवस्था के साथ ही श्री राम-लीला वेष में तदाकार प्रतीत होने लगे। महाराज जू परम गौराङ्ग ऊँचे कद के सर्वाङ्ग शास्त्रोक्त शोभायमान थे। प्रशंसा तो यह कि ८१ वर्ष की आयु तक नेत्र दन्तादि यथेष्ट उनके दिव्य नर्म सख्य भावना ही के अनुकूल रह गया। श्रीमान् गृहस्थाश्रम ही से राम-रंगानुरागी बड़भागी बाल ब्रह्मचारी स्वयं पाक ब्रतधारी थारे ही अवस्था में पिता का वियोग पाय मातादि सम्बन्धियों को त्याग विद्याध्ययन को पधारे। थोरे ही काल में व्याकरणादि मतवाद अनेक शास्त्रों को हस्तामलक पास सुप्रसिद्ध स्थान मैहर अखाड़े श्री रामसखे जू के जाय शरण गति दीक्षा ग्रहण कर रामोपासनाचार्य वर की पदवी पाय श्री अपने भ्राता कामदमणि के साथ काशिराज महाराजा ईश्वरी प्रसाद सिंह जी को अपने प्रभाव से प्रसन्न करते हुये कलकत्ते के काली बाबू इत्यादि अनेक सज्जन महारथियों से प्रतिष्ठा पाते हुये काशी के राजघाट स्थान के प्रसिद्ध अग्रवाल राय माधव प्रसाद जी जावज्जीवन अपने द्रव्यबल से पूज्यपाद की साहचर्य्या करी। कालान्तर श्रीमान् अवध पधारे अपने भ्रातृ स्थान रामरासि कुंज की शोभा बढ़ाने लगे। बन्धु बान्धवों शिष्य प्रशिष्यों के साथ स्वयं प्रभावशाली अपनी पूर्ण प्रभा बरसाने लगे। पर जैसा भरतलाल जी के प्रति श्री गोसाईं जी का कथन है:—

तेहिपुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा॥
इनको दिव्यगुण युक्त अनन्योपासना लीन सखा सागर का कौस्तुम नर्म सख्य सिंगारादि नव रसों का कल्पवृक्ष जान अपने गोद में बैठाय सख्याज्ञ मणि सखा और ज्येष्ठ भ्राता को कामदमणि सखा-जो कि आज तक पूर्वादि बुन्देलखण्ड व बघेलखण्ड अनेक स्थानों में श्री सखा जी के नाम से कहे जाते हैं। परमपूज्य अयोध्यास्थ श्रीपण्डितेन्द्र उमापति जी ने सख्य सरोज भास्कर ग्रन्थ विरचित कर दिया जो कि श्रीमान् के प्रधान पुस्तकालय में वर्तमान है और स्वयं श्रीमान के रचे हुये अनेक स्तव होरी पदावली शास्त्रार्थ मतवाद के गद्य पद्य के अलावा दश १० मुख्य ग्रन्थ हैं ''काव्य मधुकर दूत १, चित्र चिंतामणि २, आनन्दार्णव ३, भ्रातृक पंचक ४, सीताष्टक ५, वजरङ्ग विनय ६, कालिका स्तुति ७, ऋतुराज ८, प्रस्तावली ९, और इश्क विनोद १०॥ तथा अन्यान्य गुप्त प्राचीन रहस्योपासनादि तन्त्र मन्त्रादिकों से पुस्तकालय पूर्ण है उक्त महाराज जू रसायनिक तन्त्र क्रिया में भी एक ही थे। पर क्या हो यह तो राम दिवाने इश्क कमाने दुनिया से बेगाने मन मस्ताने अपना रूप छिपाये रहते थे। केवल भोजन प्रसाद भजन—पुस्तक लेखनी के अलावा ओई वस्तु हाथ से द्रव्यादि भी न छूते थे। शिष्य वर्ग जो चाहे करे—यदि श्रोताओं को विश्वास न हो तो परम दानशील वर्तमान महाराज छत्रपुराधीश जू की नगरी में जा बूझो। जहाँ के बालक युवा जरठ नर नारी। सब श्री गुरू बाबा व्रतधारी॥ यह नगरी किस प्रकार महाराज की गुप्त गुफा हुई और किस

प्रकार वर्तमान राजेश्वर ने अपने प्रेम पींजरे में इन परमहंस को आजन्म पोषा सो लिखने में मैं असमर्थ हूं। पर हाँ श्रीमान् की एक वृहज्जीवनी और है। भक्तों को सूचना देने को यह थोड़ा परिचय ग्रन्थादि मूल दिया गया है। यदि यह कहा कि संस्कृत ग्रन्थ छोड़ भाषा क्यों छपा तो इसका भाव बहुत कठिन है तथापि मैं अपनी अल्प बुद्धि से कहता हूं आप लोग विशेष बुद्धि से जाने। जिस प्रकार श्री म० अपने प्राण प्रियतम श्रीरघुनाथ जी प्यारे के विरह में इसकी रचना करी उसी प्रकार श्री म० के शोकाग्नि में जलते हुये वन्धु वान्धवों शिष्यों ने भी इसी का आधार लिया। आग का जला आग ही में सेंकने से शान्त होता है। स्वयं श्रीमान् का अनुरोध है.....

रास कुंज सरयू निकट बसौ रुदा करि नेम।
रटौ नाम भल राम को मूरति पूरन प्रेम॥ १॥

खण्ड अङ्क वसुदेव शुभ सम्वत् लही उदार।
सावन पावन पक्ष तम प्रथमा तिथि शनिवार॥ २॥

निवेदक भवदीय कृपाभिलाषी, स्थानोत्तराधिकारी पण्डित मूरति राम उर्फ़ मुन्नू जी मुकाम रामरास कुँज वासुदेव घाट, अयोध्याजी फ़ैज़ाबाद। कोटिशः धन्यवाद बाबू कन्हैयालाल फ़र्रुख़ाबाद को है जिन्हों ने बड़ी उदारता पूर्वक अपने द्रव्य व्यय से छपाया। पुनः अयोध्यस्थ नये सखा श्रीहनुमान शरण जी को जो महान परिश्रम से मथन कर इस प्रेम पीयूष का उद्धार किया।

॥ इति शुभम् ॥

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

इश्क़-विनोद

श्रीमन्नृत्यराघवाय नमः॥ अथ इश्क़-विनोद प्रकरणं ॥ मालिनी वृत्तं॥

सजल जलद श्यामं कोटि कामाभिरामं जनक नृपति कन्या लिंगितं वाम भागं ॥ तड़िदमितसु कोटि द्योतिताँ चारु हासाँ शरद् बिधु बिकाशे भावये जानकीशम् ॥ १ ॥ सुमन सरिस गाता दिव्य लीला बिधाता स्वकुल धरम ज्ञाता सर्व लोकैक त्राता ॥ हरण दुरित त्राता शर्म सर्वस्वदाता हरु निज ब्रइ जाता दुःख श्रीराम भ्राता ॥ २ ॥ प्रमुद वन बिसाले चम्पका शोक ताले तरणा तरु तमाले पारिजाते रसाले ॥ सरजु सरिसुकूले शोभिते सानुकूले बिहर सुरसपुंजे रासकुंजे मनोमे ॥ ३ ॥ दोहा—साधन कोटिन जुग करै नहीं जो प्रेम सुबेस। होय सिद्धि कबहूं नहीं दिन दिन बढ़ै कलेस ॥ ४ ॥ ताते प्रेम समेत करु, साधन सब चितलाय ॥ सेय रसिक गुरु सुजन जन सिय पिय पद सिरु नाय ॥५॥पद्म सूत को राह नहिं मन मतंग लै जाय ॥ प्रेम सो तन धन धूरि सम गनै सो प्रिय सुख पाय ॥६॥ अर्पा ॥ नित्यं भावय सीता राघवयो रहस्य मति भाव्यं। श्राव्यं भक्त जनानाँ दातारं सर्व श्रेयाँसि राम रस काव्यं ॥ ७ ॥ कवित्त ॥ है तौ जोग साधन को बिपिनि पहार बेसैं य तौ जिय जानत

अगारहीं पहार हैं। वै तौ मूढ़ आसन कै विषय निरोध चाहें ये तौ कछू जानत न इन्द्रिन विकार हैं। वै तौ स्वास रोकन को कठिन कलेस करैं ये तौ स्वास त्यागत न राखत संभार हैं। मेरे जान जोगिन वियोगिन विभेद बड़ो जोगी ज्योति ध्यावै औ वियोगी तदाकार हैं ॥ ८ ॥ वै तौ धन धामन के कानन में सोचि रहे ये तौ एक पीतम सनेह रंग रागे हैं। वै तौ परिवार सुख नास ते सशोक होत ये तो निर सोच ह्वै सुराग रंग पागे हैं! वै तौ पर नारि पेखि सुन्दरि लोभाय रहै ये तौ रोम रोम ते सनेही अंग लागे हैं। भोगी औ वियोगी की समता विसेषि पायो भोगी वै तौ मोहि सोवै ये तौ मोह रैनि जागे हैं ॥ ९ ॥ वै तो दुख पाय कै सो रोवत रहत मूढ़ ये तौ दुख पाय कै सुमोद मानि लीन्हे हैं। वै तौ सोक सागर समाय कै बिलानै जात ये तौ रूप सागर रमाय मन मीनें हैं। वै तौ पेखि भोजन ललाय बिल-लाय रहे ये तौ प्रेम छाकि कै पियूष छार कीने हैं। रोगी औ वियोगी की समता बखानि कहौं रोगी पीर छोने औ वियोगी पीर पीने हैं ॥ १० ॥ प्रीति परतीति की विशेष बिपरीति रीति जानत सुजान तौन जाके कहु लागै गो। छूटैगो लाज न समाज हूं सो काम रैहै येक निज पीतम सनेह खूब पागैगो। संजम नियम जोग धारना समाधि ज्ञान धूरि के समान सब साधन विभागै गो। ह्वै है जब लासक बिलासक जहाँन बीच खुली शमशेर लीन्हे मोह निशि जागै गो ॥ ११ ॥ जिन्है ज्ञान ध्यान जोग लोक की प्रतिष्ठा चाह निष्ठा जिन्हे गद्दी पै मुसद्दी बनि जाने की। जिन्है साधु सज्जन विरक्तन में कीर्ति चाह जिन्है राज मंडल में चाह माल खाने की। जिन्हें चाह गुरुता गँभीरता महान-

श्री जानकीबल्लभो विजयते

जीवनी

हे प्रिय पाठको, यहाँ पर थोड़ा सा अपने परम गुरू सब सुखरासी अवध विलासी मध्यकुल प्रकासी सख्य रस विकासी साकेत निवासी छत्रपुराधीश राजगुरू श्री १०८ परमहंस परिव्राजक महाराज पं० श्री सीता प्रसाद जू के परम पावन परिचय देना अवश्य है। क्यों कि श्री गोसाई जी का प्रमाणिक प्रमाण है :—

रूप विशेष नाम बिन जाने। करतल गत न परत पहिचाने।
सुमिरिय नाम रूप बिन देखे। आवत हृदय सनेह विशेखे॥

यद्यपि महाराज जू अपने महत्त्व को फणि—मणि की भांति गुप्त रखते थे परन्तु दिन-मणि की प्रभा बादलों से कहां तक छिप सकती है। अनेक भाग्यवान् भक्तों को अपने भक्ति भावना दर्शन से पवित्र जीवन मुक्ति दिये। हाय! शोक है कि इनकी चैतन्यता हम अभागों के नेत्रों से लुप्त होगई। है केवल चित्र और चरित्र हाथ रह गया। श्रीमान् का जन्म सम्वत १९०१ ज्येष्ठ शुक्ल ११ एकादशी रविवार मध्यह्न हस्त नक्षत्र तदनुसार अन्त समय सम्वत् १९८२ चैत्र कृष्ण पंचमी सोमवार प्रातः अपना परम रूप सच्चिदानन्द चिन्मय होते भये। आप सुप्रसिद्ध अमेठी स्थान के पण्डेमान्वय वंशधारीसरयूपारीण स्वर

अगारहीं पहार हैं । व तौ गूढ़ आसन कै विषय निरोध चाहें ये तौ कछू जानत न इन्द्रिन बिकार हैं । वै तौ स्वास रोकन को कठिन कलेस करैं ये तौ स्वास त्यागत न राखत संभार हैं । मेरे जान जोगिन वियोगिन विभेद बड़ो जोगी ज्योति ध्यावै औ वियोगी तदाकार हैं ॥ ८ ॥ वै तौ धन धामन के कामन में सोचि रहे ये तौ एक पीतम सनेह रंग रागे हैं । वै तौ परिवार सुख नास ते सशोक होत ये तो निर सोच ह्वै सुराग रंग पागे हैं । वै तौ पर नारि पेखि सुन्दरि लोभाय रहे ये तौ रोम रोम ते सनेही अंग लागे हैं । भोगी औ वियोगी की समता विसेषि पायो भोगी वै तौ मोहि सोवै ये तौ मोह रैनि जागे हैं ॥ ९ ॥ वै तो दुख पाय कै सो रोवत रहत मूढ़ ये तौ दुख पाय कै सुमोद मानि लीन्हे हैं । वै तौ सोक सागर समाय कै विलाने जात ये तौ रूप सागर रमाय मन मीनें हैं । वै तौ पेखि भोजन ललाय बिललाय रहे ये तौ प्रेम छाकि कै पियूष छार कीने हैं । रोगो औ वियोगी की समता बखानि कहौं रोगी पीर छीने औ वियोगी पीर पीने हैं ॥ १० ॥ प्रीति परतीति की विशेष विपरीति रीति जानत सुजान तौन जाके कहु लागे गो । छूटैगो लाज न समाज हूं सो काम रैहै येक निज पीतम सनेह खूब पागैगो । संजम नियम जोग धारना समाधि ज्ञान धूरि के समान सब साधन बिभागै गो । ह्वै है जब लासक बिलासक जहाँन बीच खुली शमशेर लीन्हे मोह निशि जागै गो ॥ ११ ॥ जिन्है ज्ञान ध्यान जोग लोक की प्रतिष्ठा चाह निग्रा जिन्हे गद्दी पै मुसद्दी बनि जाने की । जिन्है साधु सज्जन विरक्तन में कीर्ति चाह जिन्है राज मंडल में चाह माल खाने की ॥ जिन्हें चाह गुरुता गंभीरता महान

साकी जिन्है चाह मोक्ष जोति ब्रह्म में समाने की । जिनके सुमति चाह सुमति कमावै जग तिनको न काम कहूं नेह पंथ आने की ॥ १२ ॥ हेरि नर नारिन में नीके व्यभिचारिन में सन्तगुर मारिन में चित्त को चराय ले । तरु वन चारिन में मीन मृग बारिन में कूलन कियारिन में मन ये रमाय ले । नैन सुख कारिन में खग गिरि झाडिन में छोड़ि छल छिद्र अवलम्ब दृढ़ लायले । इश्क को कमाय ले गमाय ले प्रपंच जग बिना यास पीतम को हियरे लगायले ॥ १३ ॥ जगसो हसाना मुख कारिख लगाना निज दौलत गवाना वदनामियां उठाना है । ठौर ठौर जाना दोस्त रुषका वचाना खूब गालियां कमाना मज़ा मनका उड़ाना है । आना फिर जाना फिर करना वहोना दिल अपना जलाना खाक़ तनका मिलाना है । सीता प्रसाद बाना बना है देवाना यह आशिकी कमाना यार जूतियाँ का खाना है ॥ १४ ॥ पाना नाहिं दाना खाक सीस पै उड़ाना मांगि टूट खाना यो फकीरी का कमाना है । जान का जलाना सान मान का मिटाना कान दौलत बहाना परवानगीं उठाना है । इश्क के बहाना इस फंद मैं न आना यार चश्म का लगाना चाम आपना खिचाना है । सीता प्रसाद केहूं मिलै जो अपाना पीव आना फेरि आना फेरि फेरि कै न जाना है ॥ १५ ॥ छन्द पद्धरी ॥ जब लगति ललन की लगन जोर । तब उठत कठिन उरसे मरोर । मन होत चंगतजि कै तुफंग । चढ़ि प्रीत गगन देखै सुरंग ॥ १६ ॥ निजदृग चकोर पिय मुख निसेस । तब लखै रूप अदभुत रमेस । निजहृदय कंज प्रीतम दिनेस । लखि फूलि मुदै पेखत निसेस ॥ १७ ॥ निज मान भीन प्रीतम नदीस । तेहि हीन होय छिन माहि सीस

पिय पूर्णचन्द्र निर्मल अकास। मन सुद्ध प्रेम हिय अचल भास ॥ १८ ॥ पाखंड तिमिर सब होत नास। श्रीराम रूप दर्पन प्रकास। तब आतम रूप दरसत अखंड। आनंद सिन्दु उमगत उदंड ॥ १९ ॥ जब दशा प्रेम उमड़त उदार। तब होत मोह भ्रम तिमिर छार। जब इश्क़ खड्ग चमकै प्रचंड। कटि गिरें सकल पांखड मुन्ड ॥ २० ॥ जब उठत प्रेम निर्मल प्रकास। प्रिय मिलन चाह उत्साह षास। श्री गुरुप्रसाद लहि सियप्रसाद। पिय रूप सिंधु मृदु मधुर स्वाद ॥ २१ ॥ बढ़ परि पूरण हिय हुलास। नितरास ध्यान हित रूप खास। उर विरह पीर प्रिय मिलन हेत। निज आतम खोजत ह्वै अचेत ॥ २२ ॥ वरवै ॥ जागु जागुरे जियरा सोबत मोर। बीत गये बहु दिनवा ठीक न तोर ॥ २३ ॥ करसि ललन पर नेहिया तजि सब काम ॥ अब यह देहियाँ व्हैगै पाकल आम ॥ २४ ॥ चढ़िकै नेह जहजिया जा भव पार। नाहीं डग मग करिके बुड़वे धार ॥ १५ ॥ करिकै सुरति ललन कै मन अनुराग। रोम रोम ते जागल विरह आग ॥ २६ ॥ सोरठा-उपज्यौ सात्विक अङ्ग नख सिखते पिय मिलनको। भयो सकल भयभंग उठ्यो इश्क समसेर लै ॥ २७ ॥ करत क़तल भ्रमजाल मोह मोर अज्ञान तम। लिखत पत्र निज हाल बिव्हल तन मन दसा निज ॥ दोहा-ललन अरज मेरी सुनौ हौ तुम परम दयाल। रोस न कीजे नेक मन सुख सागर जन पाल ॥ २९ ॥ जब ते छुट्यो संग तब तब ते भयो जो हाल। लिखि हौं भेजत सत्य सब फस्यौ प्रेम के जाल ॥ ३० ॥ कुन्डलिया ॥ ऐसी गति मेरी सदा निशि दिन बीतत लाल। जब जब आवति सुरति तब तब उपजत साल। तब तब उपजत साल हाल कासों अब कहिये।

तलफत छिन पल जाय हाय कहलगि तन तइये। किमि सहिरहिये लाल लागि विरहागिनि जैसी। फाणिविनु मणि जल हीन मीन मेरी गति ऐसी ॥३१॥ कवित्त॥ चिंता मणि चित्रित विचित्र देख्यौ भूमभाग देख्यो वन बाग त्यों सोहाग ते विहीन में। देख्यौ कुंज पुंजन सुमंज अलि गुंजन को देख्यौ चहूं कूल फूल सूल से नवीन में। देख्यौ शैल कंदर सोहावन सकल देस पायो सुख लेस न करीरन प्रवीन में। सुखद समाज राज सम्पदा सुसाज सब जानत मलीन एक लालन सुहीन में ॥ ३२ ॥ कुन्डलिया ॥ प्यारे तेरे संग लहेउँ जहँ जहँ मोद उमंग। तहँ तहँ लालन लखत ही बोरत सोक तरंग। बोरत सोक तरंग अगम हियरो थहरावै। धीरज विटप बहाय विकलता विपुल बढ़ावै। सीतल सुखद समीर अनलकन से तन जारे। सहि न परत यह पीर कहिय अब केहि बिधि प्यारे ॥ ३३ ॥ कवित्त ॥ फूले चारु उज्जल तड़ाग अनुराग भरे फूले बन बाग त्यों अनन्द सरसावहीं। त्यों ही मन्जु कुञ्जन में कोकिला अलापि रहै नाचि नाचि मोर पुंज सोर को मचावहीं। ऐसो मोदवारो यह विपिनि समाज देखे रोम रोम अंगन सनेह सरसावहीं। सारे सुख दाई तेतौ भये दुखदाई मोहि लालन विहीन हिये पीर उपजावहीं ॥ ३४ ॥ मंजु ॥ जब से पिया प्रीति का प्याला तव से दिल वौराना है। लोक वेदकुल की मरजादा अन्कुस एक न माना है। चला झूमते मद मतवाला चस्मौ नसा समाना है। क़हर शहर में डेरा डाला इश्क शहर को जाना है ॥ ३५ ॥ जब से इश्क लगी इस तन में तब से सुधि-बुधि भूली है। तेरी सूरत अजब तरह की मेरे चस्मौ झूली है। हाय जवानी हर दम निकले येही जीवन मूली है। जान हमारी

तेरे कारण चढ़ी इश्क की सूली है ॥ ३६ ॥ मदिरा पिया इश्क का बाँका मेरा दिल बौराना है। झूमि रहा नैनो अलबेला प्यारा रूप समाना है। विरह अगिनि की धुनी लगाकर सोय रहा मस्ताना है। लाल लाल सारा जग देखै पाया भला ठिकाना है ॥३७॥ चमन दहक में चहिक चहिकहम कहिक कहिक कर पड़ते हैं। तेरे हुस्न जोस के रौसन पर पाकर कभी न सड़ते हैं। वन प्रमोद के कूचे फिर फिर जान अपाना भरते हैं। सोय प्रसाद प्रसाद यार के नहीं किसी से डरते हैं ॥३८॥ तेरी अदा बदामी मुझ पर सदा सवारी रहती है। कभी न जाती दिलवर दिल से ना मालूम क्या कहती है। चस्क अस्क चस्मौ से चलकर दरिया ही सी बहती है। तेरी जुल्फ कुल्फ खंजर सो जिगर क़त्ल अब चहती है ॥३९॥ बदन चाँदनी रोसन दिलपर हर दम हमैं सताता है। तेरा प्यार यार मेरे दिल से भी कभी न जाता है। अब तौ पड़े कहर चुंगल में दरद तुम्हें नहिं आता है। फिर भी होंगे हम तुम एकी ज्यौहो रहे सँवाता है ॥४०॥ तेरे कूचे में हरदम हम खोज खोज कर मरते हैं। तेरे हुस्न इश्क़ आलम में पड़े हमेशः जलते हैं। तू गैरों के फिरै फिक्र में कहर दहर हम पड़ते हैं। तड़प तड़प के इसी चमन में रो रो के दिन भरते हैं ॥ ४१ ॥ तेरे जिस्म हुस्न कफ़स में फँसे हमेशा जलते हैं। तेरे जिक्र फिक्र खंजर चढ़ि डर कर नहीं उछलते हैं। गुनहगार मैं तू गुन सागर तौभी हाथ मसलते हैं। सब्र अब्र से तड़प तड़प के जब्र कब्र को चलते हैं ॥४२॥ हम तुम दोस्त दरख्त एक पर संग सदाही रहते थे। जुम्ले हर दम किसम किसम के दिल की बातें कहते थे। लै कमान इनसान खेल में कुछ भी कभी न

चहते थे। करि २ प्यार यार हम दोनों मौज हमेशः वहते थे ॥४३॥ उसी वख्त इक आय कंचनी छलिनी कला देखाया था। नाच रंग के अमित भाव के अजब तिलस्म बनाया था। दो फल लाल रसाल देखि मैं ह्वै विहाल छकि खाया था। हम तुम कौन कौन की वह थी किसने उसे बनाया था ॥ ४४ ॥ गया होस वे होस हुआ जग फिरि फिरि फिक्र भुलाया मैं। डूबि डूबि कर मोह सिंधु में आतम रतन गमाया मैं। लगे फिरस्ते काम क्रोध के खूबो गया सताया मैं। चौरासी लख भटकि भटकि कै पल भी चैन न पाया मैं ॥४५॥ जौन हमारे तेरे साथी इश्क़ बाज़ बहुतेरे थे। वह भी भूलि गये इस हालत लगे सगे नहिं मेरे थे। अब तुम याद हुए हो दिलवर परे कौन के फेरे थे। कभी न हम तुम दूर रहेंगे क़ौल हमारे तेरे थे ॥४६॥ तेरे लिये हुई यों हालत तू मुझको भुलवाया है। तेरे मुझसे बहुत होंयगे मैं तू ही को पाया है। और कोई अब नजर न आता तेरा रूप समाया है। सुनिले रसिक रसाल रंगीले कहा विसारे दाया है ॥ ४७ ॥ तेरे खातर जान लगाया जगको ख़ाक मिलाया है। चढ़ा मुहब्बत खाँडे ऊपर दिल को नहीं डिगाया है। आशक जले मरे पचि जावै दरद न दिल कुछ आया है। अरबीले ऐसो बेदरदी किसने तुझे सिखाया है ॥४८॥ चस्मों में तू छाय रहा है जिगर जिगर धुन तेरा है। बंद बूंद सब बंधे इश्क़ के फन्द न पड़ा दरेरा है। तेरे गुन कहने सुनने में होता शाम सवेरा है। सीयप्रसाद प्रेम का कसका हुआ सुवा मन मेरा है ॥ ४९ ॥ छाँड़ि बेदरदी अब भी मिललो यही हमारा फेरा है। अब की बिछुरे कहाँ मिलौगे भर्म जाल बहुतेरा है। कूंचे कूंचे फिरैं ठगिनिया हरती सर्वस मेरा

है। अजब खेलारिनि या दुनियाँ में देती गजब धपेरा है। करै उबार कौन अब तो बिन जानु आपना चेरा है ॥५०॥ चौबोला॥ कबहूं रोय हँसै बतरावै कबहूं गावै तानै। कबहूं नाचि नाचि किलकै कल कबहूं रहै चुपानै। कबहूँ धाय चलै मत वालो कबहूँ रिसि मन आनै। जिसकी हाल भई है ऐसी सो इसकी गति जानै ॥५१॥ इश्क़ चमन में हरदम फिरते गुलसन रूप लुभाने। मासूकौ दी फिक्र जिक्र में रहते मद मस्ताने। रहे दिवाने रहम न दिल में और न कुछ भी जाने। कोई पारखी पारख करके इश्क़ी इसे पछाने ॥५२॥ रूप लुभाने मद मस्ताने इश्क कमानैं धारैं। करैं अहेर चश्म मृग झुंडन मन तुरंग असवारैं। हुस्न परस्त अस्त करि दुनियाँ अवध ैल व्रत पारैं। सीयप्रसाद रसिक रस लम्पट रहैं जगत से न्यारैं ॥५३॥ रूप पियाला पिये मगन मन कबहूं दीन न होते। अवधि छैल छवि सहर फ़ैल कर निसि दिन कभी न सोते। चश्मौ नसा खुमारी झुकि झुकि हस्ते गाते रोते। हुये फ़क़ीर प्रमोद विपिन में फिरते लेते गोते ॥५४॥सरजू तुङ्ग तरंग रंग में रहते रसमत वारे। प्रेम सिंधु में प्रान छकीले कीले नेम पियारे। करै मधू करि रूप अमी की रहै जगत से न्यारे। राम सखे पद पद्म मधुप ह्वै राम रास व्रत धारे ॥५५॥ सोरठा— छिन छिन बिरह तरंग उठति रहित प्रिय मिलन की। अनुपम अघट अभंग उर उमंग सरसत अगम ॥५६॥ दोहा॥ छके जके से वकत कहुँ कतहुं सुथिर मति होत। कतहुँ पियासे रूप के गिरत प्रेम के सोत ॥५७॥ रटत लटत बन बन अटत घटत न पियकी आस। पियत जियत रस माधुरी मुख विधु अमिय विकास ॥ ५८ ॥ कुण्डलिया ॥ लालन बिनु तुम्हरे लखे दिवस

रैनि इमिजात। गात दहत लोचन बहत नहिं आवत मुख बात। नहिं आवत मुख बात जात नहिं जीव अभागी। अंतर भाथी लगी सुरति धधकावत आगी। नैन सलिल मृदु तैल लगन चाहत तुव वालन। छन २ मन अकुलात कहो रहिये किमि लालन ॥५९॥ ख्याल न लालन मानवी कठिन विरह की पीर। तुमहूं जानत हौ सही रहत नेक नहिं धीर। रहत नेक नहिं धीर फिरत बन बन मतवारो। मीठो तीतो लगत गरल सो अमृत धारो। मातु पिता गुरु मित्र बचन तन बेधत भालन। कठिन इश्क की पीर मानवी लालन ख्यालन ॥६०॥ कठिन कटारी नेहकी लगी जाहि तन माहिं। देह गेह की का चली तलफि तलफि छन जाहिं। तलफि तलफि छन जाहिं विरह दव तन वन जारै। धीरज सलिल अथाह अगम नहिं ताहि संभारै। लगैं सूल से फूल गरल सी प्रिय तम प्यारी। भूल जात सब लाज कठिन लगे नेह कटारी ॥६१॥ लगी कटारी नेह की ठटी कलेजे आय। गटी गटी काटी जिया पिया मिलौ किन आय। पिया मिलौ किन आय लाज तन जात हमारी। हँसिहैं सारे लोग होइहै तुमरी ख्वारी। सान शाह दरवेश हार मैं पड़ा दुखारो। महाराज अवधेश छैल दृग नेह कटारी ॥ ६२ ॥ सवैया ॥ खंजन के मद गंजन नैन प्रभंजन से उर सीतल कारी। कंजन से विनु अंजन पैन सुमंजन में सुख सिन्धु बिहारी। कुंजन में अलि पुंजन भौंरजु गुंजन में जो रहीं मतवारी। ते बिनु देखे तुम्हें नृपलाल हिय बिच सालति मानौ कटारी ॥ ६३ ॥ कानन खंजन आनन सिन्धु प्रभंजन भाजि दिसान समायो। कंजन वारि अथाह छिपे दृग पैन भगे पल कान छिपायो। अलि भौरन भोर दुका वन वेलिन

वेलिन यार तुमै लै लुकायो । इत नैन कटाच्छ कटारी कटा करि कै कुल सर्वस मोर लुटायो ॥६४॥ दोहा-लालन तुम्हरे बिनु लखे ललकत हैं ये नैन । तलफत तन हियरो जरत बरसत नीरज न ॥६५॥ लालन बिनु मुख छवि लखे परत नहीं कहुं चैन । निठुराई तजि दीजिये हेरि रसीले नैन ॥६६॥ लालन बिनु तुम्हरे दरस जरत रहत ये नैन । कहा करैं कछु बस नहीं कहत बनत नहिं बैन ॥ ६७ ॥ लाल तुम्हारे बिनु लखे ललकत हैं ये नैन । छनक न धीरज धरत हैं रोवत दिन अरु रैन ॥ ६८ ॥ नैन तिहारे कमल से कोमलता के ऐन । गड़े हमारे तोर से पड़न देत नहिं चैन । ॥६९॥ नैन तिहारे हैं असो भये असी सि दार । काटत सिर विरहीन के नेक न मानत हार ॥७०॥ नैन तिहारे पैन अति पीर बढ़ावन हार । भये लगे हमरे हिये कासो करो पुकार ॥७१॥ नैन तिहारे कठिन ये लियो हठिन को जीति । चूर चूर करि धूरि ज्यौ करि छोड़त अन रीति ॥७२॥ नैन तिहारे मीन से गहत पैठि मन मीन । गटकि जात अनयास ये तजत न दीन अदीन ॥७३॥ नैन रसीले रस भरे लागत अति सुख देत । कढ़त न काढ़े कैसहूं तन मन धन हरि लेत ॥ ७४ ॥ नैन वयन सब कोउ कहत नयन नेक इनमाँह । देत चैन छन एक हूं सूखो तरु वर छाँह ॥७५॥ वैन जो होतो नैन के तौ न बचत संसार । याही ते विधिना दयो पलक कुठाट केबार ॥ ७६ ॥ नैन तरनि तम हरन हित विधि विरचित करि दीन । दुरवासा मुनि सरिस अटि सकुल अछय छय कीन ॥ ७७ ॥ नैन नैन के लगत खन बढ़त प्रेम रस धार । बिछुरनि विरह दवाग्नि तन बड़वानल अनुहार ॥ ७८ ॥ नैन समुन्दर प्रेम जल पावक विरह

प्रचंड । विनुप्रियतम संहार नित करत रहत ब्रह्मण्ड ॥ ७९ ॥ नैन नैन के मिलत हा बढ़त प्रेम जल धार । सात समुन्दर ते अधिक विश्वडुबावनहार ॥ ८० ॥ नैन सैन के सैफ से कतल होत संसार । जोगा जंगम की कहा विवश होत करतार ॥ ८१ ॥ नैन अपार समुद्रजल छविमन मीन समान । कहि न सकत विछुरत मरत का करि सकत जहान ॥ ८२ ॥ कायर दूरहि ते भगत सूर धसत तहँ धाय । रूप रतन लहि जतन सो फिरिन फिरत सुख पाय ॥ ८३ ॥ ज्ञानी जोगी सेवरा और विरागी कूर । ऐ पाजी नहिं जात तहँ काग कंक से दूर ॥ ८४ ॥ नेहा नेह समुद्र में हँसि हँसि गोता लेत । रूपरतन लहि जतन करि नहिं काहुन को हेत ॥ ८५ ॥ तह संजोग वियोग दोउ उभय कूल तेहि केर । रस सागर आनन्द जल घटत न केहूं फेर ॥ ८६ ॥ "सवैया" नैन गरो तन जात जरो अब काहि सुनाय कहौ दुख ऐसो, दाह बढ़ो विरहागिन को नहिं जात सह्यो यह पार अनैसो । सीय प्रसाद को हाल कराल भयो जग जाहिर मीन को जैसो, दोष नहीं तुमको कछु लालन जानत नेह धौं होत है कैसो ॥८७॥ नेह बढ्यो सो बढ्यौ अति ही लगि के दृग नारहिंसिंधु सकान्यौ । स्वाँस समीर सुग्राह मनो विरहागि दवागिनि सी अनुमान्यौ । नेह प्रवाह जहाज भरे विरही रतना कर रूप प्रमान्यौ । सीयप्रसाद हुलास विलास सुपूरनता अधिका जियजान्यौ ॥ ८८ ॥ रूप समुद्र सुधा निधि ते अधिकी अधिकी सुखमा सरसावै । सम ताके नहीं सुरनायक की रघुनायक की छवि जो दरसावै । कोटिन चंदन ताकी छटा लखि कोटिकला बढ़ते घटि जावै । दिन नेह छट्यौ धिगतूं धिगतूं धिगतूं न लजावै ॥ ८९ ॥

सुनिवो मृदुतान न रूप पछान न तानन रंगन की गति जानो। छन्द कवित्त नहीं रसरीति न प्रीति प्रतीत कछू हिय आनो। जान्यौ अलंकृत भेद नहीं रति केलि कला की कला न पछानी। या जग आय बृथा जनम्यौ धिगतूं धिगतूं धिगतूं अभिमानी॥९०॥ ॥शिखरिणी॥ मुधा मिथ्या ज्ञान भ्रमण भ्रमरी भूत भुवने तपस्त्यागे पागे जपन यजने ताप तपने ॥ जायंगुस्तागी करि करि गुजारै है हर रोज़ इजाजत्ते उसका जिसम दिलवाया है जिस्ने ॥ ९१ ॥ अपारे संसारे भवकर्ण धारेण रहिते ! महाँ भो धौ मग्नं सकल विधि सामर्थ्य गलितं। तुम्हीं आदम्मेरा सिफत कर फेरा इस गली। इजाज़त जोपाऊँ गरज गमगकौनुगदितं ॥ ९२ ॥ लगादिल से तू है नज़र नहिं आता अब कोई। जला में हूं जाता विरह दा आतस लगा। हुआ दिल में मेरे दरद यह घेरे हमनकी वही प्यारा आवै दरस दिखलावै दुख छुटै ॥ ९३ ॥ बिना तेरे देखे सजन केहि लेखे सब खलक। सदा जीबन्मेरो मृदु हसन्तेरो पिअरवा तुझे कैसे पाऊँ मिलि जिय जुड़ाऊँ सुख लहौ। कहौ किस्से प्यारे अनुपम विथारे विरह की ॥ ९४ ॥ अरे प्यारे मेरे दरद दिल भारी अब हुआ विना तेरे हेरे कल न कहुँ पाता छिन घरी लगी तेरो आशा दरस प्यासा मरत हौं। दयाकीजे दीजे दरस जिमि जीजे कछु दिना ॥९५॥ तुही प्यारा मेरा तुम बिन अँधेरा जग लगे। सुधा प्याला प्याता सुछवि दरसाता दृगन को। मिले खेले मैले इमि उर उलै लै उठति हैं करो क्यारे प्यारे वर सुखद सारे दुखद हैं ॥ ९६ ॥ हुआ आशक तेरा सुरति नहिं मेरी तूकरें जला मैं हूं जाता विरह दा आतश लगा। तुही प्यारा मेरा कबहुँ कर फेरा इस गली। जियो तेरेहेरे हरखि मिलु येरे बेदरदी॥९७॥

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान

वाचनालय

बचा लेवे मुझको चमक जुल्फौं दीखिवाकर । न भावे जो तुझको कतल सम्सेरों से करजा । मरे दस्तौ तेरे अदब पई मेरे हैं भले । परिन्दा हो जाऊँगा जखम सैयाद करके ॥९८॥ तुही भ्राता त्राता परम सुखदाता प्रिय सखा पितामाता तेह गुर जन सनेही यक तुहीं । नही जानौं दूजो प्रभु प्रवल पूजौ न कबहूं तुही नेता हेता प्रिय दरसदेता सपन हूं ॥ ९९ ॥ कदामल्ली कुंजोविगसित मतल्ली दलचयेघनच्छन्नेबन्यै रूप हित हरिच्छी करणैः । प्रमो ह्यारामे सरयु सलिलस्नान विषये मदालिकनं दृक्ष्ये किमपि नृप वालं प्रिय सखं ॥ १०० ॥ निकुंजे रत्नाद्रैर्मणिगणचमत्कारनिचये महोल्लासोल्लासदभवसुखसुमुच्छा लितबने । कदातस्यास्तीरे सखिगण करोच्छिप्तसलिले मदान्किलन्नं पश्ये किमपिनृप वालं प्रिय सखं ॥ १०१ ॥ घनच्छं नेष्वभ्रेष्वभि नवदलस्पर्द्धि पुलिने । तरंगप्रोत्तुंगैरमल सलिलैधौंतशिखरैः ॥ सुखा सीनं सस्वन्नि खिलनिविदुच्छाय निलये । मदाक्लिन्नं दृक्ष्येकिमपि नृपवालं प्रिय सखं ॥ १०२ ॥ सुलोलेष्वाँदोलेसखिगण करोच्छिप्तसविधे प्रियो-त्संगे तुंगेत्वभिरतमपश्यन्वन भवम् । मुदाश्रृण्वन्गायन्निखिलन लिनाक्षो परिवृतं । पदाक्लिन्नंदृश्येकिमपिनृपवालंप्रियसखं ॥१०३ मालिनीवृत्तं । मधुर मधुर बोलौ प्रेम के कुपल खोलौ उर सुख सरसावो तानवाँकेसुनावो । नयन सयन तेरा चोट कीनी घनेरी नहिं छिन सुधि भूले जुल्फ में प्राण झूलै ॥ १०२ ॥ अहह नृपति लालायो किया यो विहाला अगम यह कसाला जान कालेन वाला मोहियक गति तेरी हेरिये हाल मेरी कतरु बिरह बेरी कीजिए नाव देरी ॥ १०५ ॥ अवध ललन प्यारे प्राण जीवन हमारे कब तुम मिलि जैहौ अङ्क में मोहि लै हौ । तुम बिन कल नाहा

जानि ले जानमाही गहहु सपदि वाहीं देहकै कंठवाही ॥ १०६ ॥ अखिल सखन संगे खेलिबो रास रंगे सफरसुसफ जंगे बैठिवो सत्तुरंगे । प्रमुदित वन वागै आपके सङ्ग लागै उमगि सुअनुरागै पाइकैमोद पागै ॥ १०७ ॥ प्रमुदवन निकुंजे गालतोमल्लिकाढ्ये सरयु सलिल धौते रत्न सानुस्थ शृंगे । अमित सखि परीतंरास रंगे सुगीतं किमकि नृपति बालं चक्षुषा पश्य तालं ॥ १०८ ॥ गज गवय हरिण्यः व्याघ्रव्याघ्री करिण्यः प्रचयनद नलिन्यः पश्य मानः कदाहं । प्रमुदवन मरालं चोमिला कंठ मालं किमपिनृपति बालं चक्षुषा पश्य तालं ॥ १०९ ॥ अहिमपि हत भाग्यः सर्वदा सर्वथा ज्ञः प्रियतम किल पूपंराजपुत्रस्यसर्वे । नहि नहि खलुकस्माच्चक्षुषागोचरो भद्रघुकुल मणिबालः प्रेमसश्चाँतरस्थः ॥११०॥ तव विरह महोग्र ग्राहगस्तः सखाब्धौरघुकुल मणिके तो किन्नमाँ प्रेक्षसेत्वं । श्रुतमपिकिल कश्चिद्ग्राह ग्रस्तं पुरुषै गजवरमति कष्टा च्चाद्भुतस्त्वंकिमन्यः ॥१११॥ त्रिभुवन गतकी तिस्त्वं पुरानंत मूर्ति र्धृतमति सुरसंघान्वारितादानवोधैः । श्रुतमपि श्रुतसंघैरर्दितस्त्वद्वियोगाच्छित मरण दशांमां रक्षितात्वं किमन्यः ॥ ११२ ॥ कमल अमल कीर्तिर्विस्फुद्दिग्दिगंते विमल विधु विकाशा चन्द्रिकाँता । ममहृदि शुचिकंजे घोरप्रध्वांतपुञ्जे तव सदननिकुञ्जे सन्निधाने न भाति ॥ प्रमुदवन विलासो सर्व कल्यणिरासी भुवनचयप्रकाशो किन्नमांरूपराशिः । अखिल स्वधनिवासंदासदासानुदासं श्रियसदन निवासी देहिदास्यंसलास्ये ॥११४॥ कुण्डलिया ॥ लेहु रँगीले संग अब छोड़त हौ केहिहेतु । प्राण पयान कियो चहत अहो अजस कसलेत । अहो अजस कस लेत देत दुखनिधि अवगा है । बूड़तबाड़त दात दहत

किमि गहतनवाहै । कह सियप्रसाद यह अरज सुनत उठि मिलहु रसीले । नहिं धीरज धरि जाय ज्याय अब लेहु रँगीले ॥११५॥ कीजै कैसा कठिन यह लाज मुजाद न आजि ! बिनु सहायमोहि जानि सब रहे सकल दिसि गाजि । रहे सकल दिसि गाजिसाजि निजदल बहुतेरो । हरसिनिसान बजाय आय चहु कित गढ़घेरो । कहत बनत नहिं बात एक मैं तुम बिनु वैसा । संयुग परयो अपार कहौ कीजै कैसा ॥ ११६ ॥ दिल जैसा तैसा करो साजो समर समाज । चढ़ौ निसान बजाय रन गनौ जौ हौ कछु आज । गनौ जौ हौ कछु आज आपनो काज सँवारो । निर्भयता दल प्रेरि कुल कानि बिडारो । बिरह उसास प्रचंड तीर भट भीर न खोवै । करौ नेह को राज अटल सब दिन सुख सोवै ॥ ११७ ॥

शौरिणो छंद

समर तैयारी भई सहर में सहर पनाह भये तैयार । तोपैं लागीं बुर्ज बुर्ज पर सारा खेत रिसाले क्यार । साजी फौज कलंगी तुर्रे कोई कोई कुन्डे धरे कपार, ढारें ढाढ़ी करखा बोलैं पहिरे कुलहा कमर कटार ॥ ११८ ॥ गावैं नाचैं मारू बाजै हाथी घोड़े करैं चिकार, झुकी बदरिया सी चहुंदिसिते फौजै अस्वनि की असवार, कड कड कवचैं झिल मिल बखतर कसि कसि तुन्नोरै सिरदार, ललिके ललिकारै लरिबे को ठोकैं ताल कोउ वरियार ॥ ११९ ॥ तंग कसे तन गसे जोस के रोशन भरे भये तैयार, ललकारै कर लिये सिरोही भाले साँगैं बुर्ज अपार, खाँड़े तेगा पेस कब्जसर फरसा और भुसुंडिन क्यार, सेर बधा बन्दूक तमंचा पथरकला बरछी वरदार ॥ १२० ॥ चले सिपाही ऐड़ भरे सब चहुँ दिसि

चमकि रही तलवार,पैचें कसी जोडावर घोड़े तोड़ेदार चढ़े असवार, भरीं दुनाली चढ़ी कमानैं ढालैं दमकैं गैंडन क्यार, बान अगिनियाँ फर फर फरकैं गोला बंबन के भन्नाँय, गोली गोला तीर तडपती चहुँ दिशि घन्नालैं घन्नायँ ॥ १२१ ॥ जोग जज्ञ बृत नेमरु संजम जम नियमासन प्रत्याहार, ब्रह्मज्ञान समाधि सदा-शुचि ये सब वीरन के सिरदार, लिये शिरोही दहुं दिसि गरजैं मोह कटक को करैं संहार, परब्रह्म की करत दोहाई काम क्रोध पर करत प्रहार ॥ १२२ ॥ काम क्रोध अरु मोह द्रोह मद दंभ दंड पाखंड प्रचार , पाप ताप तम प्रबल अज्ञता माया मच्छ जाल को धार, उमड़ी आवत सैनजोरावर सब जीवन सिर डारत जार, तड़फत गिरत फसत कोउ डूबत उछलि करत कोऊ ललकार ॥१२३॥ ज्ञान विराग तिब्र तरखाँड़े दोऊ हाथन करैं प्रहार, भर्म जाल हति गर्द गर्द करि माया दल की करत संहार,बिजय पाय कोउ कोउ सुख फिरते आनन्द वारन पै असवार,कोऊ घायल परै समरमें कोऊ डारि भगे हथियार॥१२४॥ भाजि भाजि अपने स्वामिन पै अपनी अपनी नज़र गुजारि, लै निदेस फिर फिर कै अभिरत मारत तमकि तमकि ललकारि, अमर रहतनिसि द्यौस लरतनित रनते कबहु न मानतहार॥१२५॥ विषयी जोगिन को सँगर इमि वरन्यौ निज मति के अनुसार कहो वियोगिन को अब संगर सान मान दल को सिंगार । कह लगि लिखिये विपुल वार दल लेक वेद मरजाद न क्यार ॥ १२६ ॥ कठिन लराई होत रैनि दिन कबहु न हार जीत निरबार । कठिन मवासी यह काया गढ़ चार कोट मय वार न पार । लरत २ चौथौ गढ़ लैवे तौ सब जिय के मिटैं खमार ॥१२७॥ रहै अचल

निज सुख समुद्र तट बिपिनि प्रमोद विमल अस्थान । ह्वै अखंड तन रहित मोह तम स्वयं स्वतन्त्र शक्ति बलवान । पिय पीतम की रूप माधुरी निज सेवा पावै मतिमान । सो कछु वरनि कहो बिरहिन की कथनी करनी कलिन कमान ॥१२८॥ सो० ॥ सबते न्यारी राह विरहिन की या जगत में । बांधे इस्क सनाह फिरते मतवारे निडर ॥ दोहा ॥ कमर कसे पिय मिलन को मन मतंग असवार । रामरूप दारू पियैं करत कतल संसार ॥ १२९ ॥ छंद शौरिणी ॥ जुटी साहिनी इन सबहिन कै जिन काँ देखि कँपै संसार । बड़े बड़े वीर तड़प्पत आवैं होत नगारेन की धुधुकार । बड़े बड़े सामत चले सब बढ़ि बढ़ि घोड़न के असवार । ज्ञानविराग जोग धारन तप संजम नियम करत ललकार ॥१३०॥ जोगी सेवरा भोगी कादर ज्ञानिन बांधे ज्ञान कटार । कामी बदनामिन के टोकरा सिरपर लादे बोझ अपार । करमी करमकाण्ड मतवाले जैनी बौध रहित करतार । अपने अपने धरे टेपारे कथनी हाट लगावन हार ॥ १३१ ॥ विधि निषेद की फाँसी वाले नरक स्वर्ग की करैं विचार, पाखण्डी परवस बतरावैं माया कोड़े लगै अपार, मतवाले ह्वै गिरत गलिन में भग नरदन जल प्राण अधार । डूबत ऊबत गिरत पड़त हठि कर दम मोह कोह मद मार ॥१३२॥ हमें सो बड़ो कौन जग सुखिया पीवतलारबने के करतार । महा घमंड भरे मद छाके जोवन जोम पड़े मझधार । येऊ तमकि तमकि चढ़ि धावत मैनतुरँगन के असवार ॥ १३३ ॥ लिय सिरोही वीर बाँकुड़ा ह्वै अभिमानसिंह असवार । काम क्रोध मदलोभ मोह भ्रम मन्त्रिन सहित देत ललकार । तीर तमंचा तेगा चमकैं फरसा सैफ अगिनियां वान । कढ़ी सवारी तमन तोप लै पेली उर

अन्दर मैदान ॥१३४॥ विरहिन सहर घेरि सब लीन्हे लाम बांधि गरजै मदमान । मदन महीप बानझरि लाई जेहि को संगी सबै जहान । प्रान पियारे तुम बिनु लखि मोहि वैरनि रच्यो कठिन घमसान । तड़ तड़ बख्तर कड़कत धड़कत फटकत कदरनके लखि प्रान ॥१३५॥ गोला गोली तेगा चमके हाथिन घोड़न के घुरथान, बजै नगाड़ा पातसाहि का सुनि कदरन के सूखत प्रान, दुहूओर संयुगी सुभट सब निज निज बचन करैं परिमान । पड़ा अकेला जह तुम बिनु मैं तहँ यह फौज आय समियान ॥ १३६ ॥ लाक कानि मरजाद अभागे येऊ तुरंगन पै असवार । पड़ा निसान कलेजे अन्दर लगी होन तोपन धुधुकार । लाजतिरीवा नकटो रोवै चहु दिसि दौड़ि करै डिडकार, बजै दमामा दलबादल का सुनि कर सोर सबै हुसियार ॥ १३७ ॥ जतन बतावौ मेरे प्यारे बेड़ा कैसे लगिहै पार, कठिन चढ़ाई करी सबन मिलि इकलो जानि सहर बिन यार, हरदम सस्त्रन की झरि लागी आगो उठो सकल तन माहीं क्यार, धज्जी धज्जी उड़ैं फिरत मन सूझत रन में बार न पार॥ १३८॥धड़धड़ धड़कत छाती कड़कत फड़कत बाँह वारहीं वार, करौ सहाय आय अब प्यारे ह्यांतौ चलत कठिन तलवार, भये सिथिल सब हमरे साथी करि करि दाब पेच बलवान, रहे शेष अब कछुक सिपाही जे रन जीति इश्क मैदान ॥१३९॥ हम रघुवंशी आलवाल हैं जिन रन दियो न पीछे पाँव, तिन के ह्वै हम हटैं न पीछे ना कुल केर धरावैं नांव, हम तौ पग नहिं पछिल धरैंगे चहै तन धज्जी धज्जी उड़िजाय, इन पापिन से कौन डरै रन लरिहैं मरिहैं सन्मुख धाय ॥१४०॥ हम क्षत्री हैं सखा तुम्हारे हमसन कौन भिरै बलवान, मारि गिरावै समर भूमि में जो नहिं

मगै मोह अभिमान, विरह हमारा पात है सुरति सुलछमीपै असवार, निर्भय भट सामन्त हमारे कोटिन वीरन के सिरदार ॥१४१॥ आठ मुकद्दम हर दम हमरे जिनके बलकर नहीं संभार, तिनके संगा अपर महारथ जिनकर नाउ विदित संसार, बड़े लरैया समर भुम्म में जिनके बलकर वार न पार, हावभाव अनुभाव विभाअहुँ व्यभिचारिन संचारि क्यार ॥ १४२ ॥ स्तम्भ स्वेद रामांच भंग स्वर कप विवर्ण वारबलवान, अश्रुपात परलाप महारन चलिहै कठिन उसासन बान, मार गिरावैं हम सबहिन को सब के लेय मूंड कटवाय, भलक दिखाय देउ अब प्यारे हमरी सबी बात बनिजाय ॥१४४॥ दरस तुम्हारो जो कहुँ पावैं को सम सरि करि सकै हमार, लखन लाल अलबेले प्यारे हौ तुम मेरे प्रान अधार, तुम न वेदरदी कबहूं होइयो भैया यही मर्द कै काम, सर करैगे इश्क चमन में लैकर रामचन्द्र कै नाम॥१४५॥समर झमेला करि मन मेला रेला करि झेलै धमसान, सकल सुभट दल कतरि करेला देहै भूजि भर्जि दरम्यान ज्ञान कटक अरु मोह कटक सब काम कपट हनि हनि मैदान, इश्क निसान बजाय जाति बल करि कै अटल राज परिमान ॥१४६॥ छन्द चौबोला॥ जीति मोह मद काम कोह दल प्रीय मिलन लय लागी, हुआ अचल मन विरह गर्क दृढ़ फर्क तर्क सब त्यागी। प्रीति तर्क सी कसी कमर से भरी उसास अपारै। अचल अलम आनन्द नामकी तीर तरल तर मारै ॥१४७॥ हा प्यारे हा राजदुलारे हा रघुकुल उजियारे। हा प्रिय प्राण नाथ हा रघुवर हा रघुनन्दन प्यारे। हा सुख सागर रूप उजागर गुण गन आगर प्यारे। हा नव नेह मेह परि पूरन हा जोवन मत वारे ॥१४८॥ हा मत भावन मुद सरसावन मदन लजावन हारे। हा घनश्याम राम नट नागर युवतिन

जियन अधारे। हा श्री स्यामा मन अभिरामा रमन अचल व्रत बारे। सुघर सलोने हा रस सलोने नील जलद तन प्यारे ॥१४९॥ हा आनन्द सिंधु करुणानिधि दोन जनन हितकारी। हा मद मोह कोह दारुण दल दलन प्रवल व्रतधारी। हा नृत्य प्रिय नृत्य गान रत रमणि न नित्य बिहारी। हा रघुनायक रसिक सिरोमणि श्री प्रमोदवनचारी ॥१५०॥ हा सर्वेश प्रणत भय हर पर अवतारन अवतारी। शील सकोच सिन्धु नट नागर आगर अवधबिहारी। सबके संग सबके प्रिय सब मय अस सब वेद प्रचारी। भये निठुर अब अखिल विश्व हित मेरी सुरति विसारी ॥१५१॥ हा सिय रघुवर हा सिय बल्लभ हा सिय रमण पियारे। हा सिय जान जानकी नायक जनक सुता प्रिय प्यारे। शील सिन्धु सागर नागर शुचि सुन्दर सरल सलोने। शुचि सुकुमार सुजन प्रिय बल्लभ सुभग सुलोचन कोने ॥१५२॥ रस शृङ्गार अपार रूप निधि रोम २ प्रति जाके। विधि भरता हरता सब जगके रहत सदा रुखताके, इन्द्र कुबेर वरुण दृग पति दिग अगिन वायु वसुदेवा। चाहस जासु चरण रज परसन तरसन लहत न सेवा ॥ १५३ ॥ साई अवधेश सुवन रघुनन्दन दशरथ अजिर बिहारी। सखन समेत रमत निसि वासर वाल केलि व्रत धारी। जहँ गंधर्व देव तिय नृत्यति त्रिदिव अप्सरा प्यारी। होति निछावरि तन धन जोवन फिरत प्रेम मतवारी ॥ १५४ ॥ इनकी प्रीति लगी है जिनको सो अब काको माने, तन मन धन गनि धूर पूर सुख साहन साही आने। रामरूप पर हुये दिवाने रोम रोम लपिटाने। गनै न दूजो वस्तु अनूपम सख्य भक्ति उर आने ॥१५५॥ आप अनोखे रूप सलोने। नेह समुद्र समाने। अबधि ललन छवि ढंढ २ हिय धरिफिर फिरत भुलाने। वकै आनि

की आन वतौटी जब जैसो सुधि आनै। अवध ललन के रूप लुभाने विषय न दूसर जानै॥ १५६॥ बैठे ठाढ़े सोवत जागत सदा प्रेम मतवारे। नींद पियास भूंख नहिं जानत लोटत पाँव पसारे। छिन २ सुरति चढ़ति नहिं भूलति रोवत हँसत अयाने। वसी आशिकी हरदम दिल में फिरत कबहुं मस्ताने॥ १५७॥ कहूँ अग्यता कहूँ विग्यता कहूँ विवेक बढ़ावै। कहूं सूरता कहूँ क्रूरता गारी कहूँ सुनावै। कहूं प्यार की बात कहूं हठ कहूँ नाम धुनि लावै। छके जके से रहत कहूं मग मगन मत्त वतरावै॥ १५८॥ कहूं भरत कहूं लखन शत्रुहन कहुं हनुमंतहिं टेरैं। कहूं वीर मणि राम सखे कहुँ प्रेम सिंधु कहुँ हेरैं, कहूं सखन के झुंडन टेरत कहूं सखिन कहिं प्यारी। मेरा मीत चुराय कहाँ गई हा योवन मतवारी॥ १५९॥ किससे कहूं व्यथा मैं अपनी सुनत न कोऊ साले। सँगी दगावाज सब भागे अपने सुख मतवाले। मेरी अरज सुनावत कोऊ ना वह गरजीला प्यारा। कठिन वेदरदी दरशन देता बाहर भीतर कारा॥ १६०॥ भाई २ में निठुराई कधी सुनीना भाई रे। कहाँ से आई यहाँ अब छाई काई सी दुख दाई रे। प्रीति सलिल पै कटु कदराई निर्मलनीर छपाई रे। निपट पियासे फिर २ डोलै तृपा न तन से जाई रे॥ १६१॥ अवध सहर के गलिन २ में हरहम ढूंढ़त घूमै। सरजू रेत अचेत परै कछु दृगजा तट मणि भूमै। लता कुञ्ज द्रुम कूल कगारन अँटन अगारन चूमै। सीय प्रसाद प्रमोद विपिनि में जस धन खोजत सूमै॥ १६२॥ जिमि कँगाल धनी के द्वारे जाँचत कबहुँ न हारे। तिमि आशिक माशूक द्वारते कैसेहु टरत न टारे। धक्के पावै नहिं मन लावै फिर २ वापै जावै। ऐसे रसिक अनन्य राम छवि मधुप मनो लपटावै॥ १६३॥ गावै नाचै हँसे हँसावै

रोवै कहुँ बतरावै । प्रीय नाम को कहुं झरिलावै कहूं अमित छवि ध्यावै, कबहुं उमंगी कबहुँ तरँगी गान तान मुद पावै । राम मिलन हित सदै दिवानो विपिनि २ विल लावै ॥ १६४ ॥ ढूँढ़त घूमै गिरि तरु सरि सर उरग विहंगन काँही । अचल बैठि कहुँ करत उमान है गहत तमालन छाही । बकत झकत कहुँ उझकि तकत छिन मगन विरह मतवारो । कहूं अमान मान कहुँ करतो कोहकत प्यारो प्यारो ॥१६५॥ राज कुंवर कहं भजे जात हौ हमै अकेलो त्यागी । भूखो प्यासो रटौ विपिनि में लगी विरह दव आगी । हमरै किरिया तुमको प्यारे जो न लेहु गहि वाही । दाह बुझावै कहि वातै मृदु बैठि कहूं वट छाही ॥१६६॥ दोवई छन्द॥ प्यारे छोड्यो फिकर हमारी फिर पीछे पछितावोगे । अपने द्वारे जला देखि कर आखिर खाक बुझावोगे । खातिर खवर खरावो कुछ भो हवैगी दिन चन्द गये । आखिर आशक अवध ललन के जग जाहिर अब आन भये ॥ १६७ ॥ मेरे काम एक तुमही से और किसी से काम नहीं । चाहै मारै चहै जिलावै एक तुम्हारा नाम सही । क्यों इतनी हठ ठानि रहे हौ मिलौ गले लगि प्यारे हो । नाहीं अपने कहर दहर से करौ हमैं अब न्यारे हो ॥ १६८ ॥ आप फसोले प्रेम गसीले गरवीले अरवीले हौं । मैं भी खूब खराब ख्वार खल खातिरदार तुहीली हौं । गव्वर गरक गरूरदार गम हीन दीन मैं खासा हौं । तूँ तुरफैन तुराव तार तम तरक तमाम तमासा हौं ॥ १६९ ॥ तलवदार तुर्राव हुस्न का तरक तमाम तमाशा है । फरक न करना इश्क सहर से परा हमारा पासा है । वाजी धरा जान अपने का तेरे द्वारे वासा है । सीयप्रसाद सीयवर छवि का

रहता सदा प्यासा है ।।१७०।। छन्द रोला ।। आसक पक्का जौन होगया तिसको कोई मारै । काटि काटि तन धूरि मिलावै ऊन देह संभारै । प्यारा नाम श्रवण सुनि पावै रन चढ़ि सबल प्रचारै । ऐसी रहनो बसो जाइ दिल सोइ मुहबत धारे ।। १७१।। जो अपना महबूब दया करि काटि धूरि करि डारै । तो भी आसक अपने तनको ऐसा सुखमन धारै । धन्य हमारे भाग्य कमल कर प्रियतम फूलन मारै । शुम्भ शीस लखि चन्द भस्म हित ज्यौं चकोर तने जारै ।। १७२।। ज्यो स्वाती को बूंद निहारत चातक प्रान गमावै । गनै न दूजो जल अमृत लौ त्यागि एक लव लावै । त्यौंही आशिक पोव माधुरी पीवन को ललचावै । लखै न रूप और दुनियाँ में द्वितिय आँक नहिं आवै । १७३ ।। अलख अरूप अनादि अचल अज जिसको बेद बतावै । सो भी इसके सम सरिना है झूंठै मन भरमावै । इसके पैरों के नख ज्योती जोति ब्रह्म ठहरावै । ऐसा यार छोड़ के अपना क्या भटकै भटकावै ।। १७४ ।। मृदु मधु रस्मित विकसित वदनं सीतासह श्रीरामं । नील जलद पटल द्युति निभ नव तनु तडिल्लता जित कामं । यस्य प्रभा प्रकटित द्युति हृदि ब्रह्म विभाति प्रकामं । तंवन्दे प्रमुद्राट विविधि विशारद ललित ललामं ।। १७५ ।। कन्दर्पाधिक द्युति मृदु मधु रस्मित विद्युन्निभ तनु छामं, श्री मिथिलेश कुमारि करंमितमालिंगित मभिरामं । शरदि निकुञ्जे विकसितकंजे मल्लि मतल्लि कलाये, बीणाकरौं चित सहजानन्दे न लिंगित मा लाये ।। १७६ ।। छन्द इन्द्र वज्रा ।। वीचीदुकूला परिरम्भ हासिनी कन्जा टवी मन्जु प्रफुल्लि भासिनी श्रीमान सानन्द विभाविकाशिनी विभावये स्वे हृदि प्रेम लासिनी ।। १७७ ।। अनुष्टुप्छन्द ।। श्रीराम प्रेम पूर्णाम्बु पूरिते

सरितां वरे प्रदेहि ह्यमलाँ भक्तिं मय राम प्रसीदति ॥ १७८ ॥ मालिनी ॥ जयति सरजु दिव्ये प्रेमनव्याभिभव्ये विमल सुख विकासे रामरामम्बुभासे । मधुर रस विलासे सर्वदाल्हादकाशे-ऽमल कमल माले देहि भक्तिं रसाले ॥१७९॥ शेर सादी ॥ प्यारे तेरे अब्रू में फस कर ख्वारी हुई मेरी भली । होजाँऊँ चिट्टै चिट्ट चिट्ट पै छोड़ौं नहीं तेरी गली ॥ १८० ॥ प्यारे वदन चांदनी मुझ को दिखा जातो सही । मारने की सौक जो जुल्फैं दिखा जा तो सही ॥ १८१ ॥ तेरी सुरत मुझ को लगी मेरी सुरत तुझ को नहीं । खुद खाक सा मैं हो रहा दिल तो रहम पाता नहीं ॥ १८२ ॥ प्यारे तेरे जे दोस्त थे वो भी कहाँ अब जा रहे । किस्से तेरे सुन्ने विना प्रिय जी हमारे ता रहे ॥ १८३ ॥ प्यारे तेरे पैरों के नक्से जिस जगह मैं देखता । सिरसे चड़ा चश्मौ लगा तुझ से सिवा मैं लेखता ॥ १८४ ॥ प्यारे तेरे पैरों के ऊपर शिर बकस मैंने दिया । दर्द दिल के फ़र्क करने धूलियाँ अंजन किया ॥ १८५ ॥ प्यारे तेरे बाग़ों में हरदम आता नहीं पाता तुझे । जाता जला मैं इश्क में लाता न क्यों गरमे मुझे ॥१८६॥ तेरे सिवा मेरे जहाँ में दोस्त ऐसा कौन है । जिससे कहूं दिल की दशा बूझै विथा को सो न है ॥ १८७ ॥ सवैया ॥ जिन द्वारन पै नित देखत थे तिन द्वारन आनि निरास भये । जिन तीरन पार परात हुतो तिन तीरन पीर के त्रास भये ॥ जिन गैलन मैं छवि पीवत ते तिन गैलन आज उपास भये । जिन नैननि नीर को नाम न तो तिन नैन महोदधि रासि भये ॥ १८८ ॥ तब तो उर लाय हरयो हियरो अबतो तरसावत हो मन को । तब तो मुसक्याय अशंक करयो परतीत परयो

अपने तन को ॥ यह रीति अनोखी अहै तुम्हरी अब आय मिलौ कबहूं छन को। तब बात चलै हमरी तुम सों जग यार करार कर्‌यो हम सों ॥१८९॥ तुम सो हम सो जु बिछोह भयो तेहु को दुख केहु नहीं कहि आवै। निमि नींद न भूख न प्यास कछू छनि चैन न रोवत ही दिन जावै जोग न भोग न रोग न सोग प्रयागहु ते अति ही सरसावै। दिन केहूं कटै न कटै पुनि राति जु रात कटै दिन केहू न जावै ॥१९०॥ दोहा-दरस न काहे देत हो का मेरो अपराध। तेरो गलियाँ तकत ही, जियरा भयो असाध ॥ १९१ ॥ अपने अपने ना रहे, भये पराये मीत। तेरी गलियाँ तकत ही, सब जग भये विपरीत ॥ १९२ ॥ प्यारे तेरे नयन ये, छली नदी की धार। आगे थाह दिखाय कै, फिरि बोरत यकबार ॥१९३॥ प्यारे तेरे नैन वन, कीनो ठगन निकेत। आगे राह बताय के, पाछे धोखा देत ॥ १९४ ॥ प्यारे तेरे नयन नट, तुरत नेह तरु लाय। फेरि उखारत तुरत हीं, काहि सुनाऊँ जाय ॥ ॥१९५॥ प्यारे तेरे नैन ये, बादशाह वे पीर। रेजे करत करेज को, धरत नहीं छन धीर ॥१९६॥ अरे शिकारी नैन सर क्यों वेधत बहु वार। एक सैफ मुसक्यान की, काढ़ि कतल करि डार ॥ १९७ ॥ अरे शिकारी वीर वर तेरे सुजस ललाम। अरे मरे को मारि कै, कहा धरावत नाम ॥१९८॥ अरे शिकारी कियो भल, खाली परयो न घाव। जौ लगि प्रान शरीर में, तौ लगि दूरि न जांव ॥ १९९ ॥ अरे शिकारी तुम्हैं सम, जगत सेखद नहिं और। एक तीर में हर लियो, अमित कोटि दुख मौर ॥ २०० ॥ अरे शिकारी तुम्हैं बिनु, उलटो भयो जहान। सुधा लगै गर सो गरम, सीत भानु सम भानु ॥ २०१ ॥ अरे

शिकारी निठुर क्यों, सुनत न मेरी बात। तीर मारि बेधीर हिय, काढ़त में कदरात ॥ २०२ ॥ अरे शिकारी प्रान मम, अपने बस करि यार। भले भजे अब जात हो, क्यों नहिं करत संभार ॥ २०३ ॥ अरे शिकारी दया करि, यक अरजी मम मानु। कै भरि अङ्कन लीजिये, कै लै जैये प्रान ॥ २०४ ॥ अरे शिकारी पगन की, क्यों न धूरि मोहि देहु। लात घात मम गात है, भृगु को बदला लेहु ॥ २०५ ॥ शिफली ॥ अवध सहर के छैल छवीले प्यारे मेरे कहां गये अब नज़र छिपाकर तिन के संग रस लिया करो पिय आय मिलो रफ्ते रफ्ते। जिन संगमैं खेलि रहा था वोभी न्यारे कहाँ गये मृगयादि विपिनिमें हरदम दरशन दिया करो पिय आय मिलो रफ्ते २ ॥२०६॥ हुवा दिवाना फिरौ अकेला पाता नहि तुम कहा छिपे सरजू के चमन में मित्रन में रस पिया करो आय मिला रफ्ते २। अब फिर पाऊ सैर देखाऊँ बाजी जिन प्रान लये दिल जिगर लगाकर चश्मौ को सुख दिया करौ। पिय आय मिलौ रफ्ते २ ॥ २०७ ॥ अवध सहर के गलियन में हम मस्त फिरैं रस्ते २ दिलजान लगाकर विरह पीर का कहर करौ पिय आप मिलौ रफ्ते २ क्या गुलज़ारी खिली कियारी न्यारे २ मजा करौ इन वागन में नैनन को सुख सजा करौ पिय आय मिलौ रफ्ते २ ॥२००॥ अवध छैल दिलदार यार अब मेरे ऊपर रजाकरी सफ जंगम चाकर इन पाजिन का सजा करौ पिय आय मिलौ रफ्ते २ ॥ २०८ ॥ हुये दिवाने वन २ फिरते तुम बिन मरते रफा करो मुखचंद दिखाकर लवों के बोसा दिया करौ पिय आय मिलौ

रफ्ते २ । हरदम फिरते कहर सहर में मेहर दहर की रजा करौ रस धार पिलाकर गल से गल लग मजा करौ पिय आय मिलो रफ्ते २ ॥११०॥ चल बेलिन में फिरैं अकेली मन मेलिन से मिला करौ डर छोड़ि हमन्से चश्मों को सुख दिया करौ पिय आय मिलौ रफ्ते २ । लखि सुख जीवै मुद मद पीवैं तुम अधरामृत तुम पिया करो । निज प्यारिन का रूप माधुरी पिया करो । पिय आय मिलौ रफ्ते २ ॥ २११ ॥ सदा तुम्हारे द्वार यार हम ह्वै फकीर छनि पिया करैं । मुखचन्द मेहर के नज़र गुज़र नित किया करौ । पिय आय मिलौ रफ्ते २ । सीय प्रसाद न चाह और दिल हरदम खिदमत किया करै । बिजनादि सदन के छकि २ निस दिन जिया करैं पिय आप मिलौ रफ्ते २ ॥२१२॥ वरवा हम भये पंकज फुलवा लालन भानु । जामिनि भइ लिवि छोहिया भान विहान ॥२१२॥ बिरह पीर भइ न दिया अति वल पीन हम भये तट तर वरवा छिन २ छीन ॥२१३॥ लालन भेजल दहवा हम भये मीन । है वंसिया सब लोगवा विछुरन कीन॥२१४॥ विरह अपार समुदया काय जहाज । बूढ़त प्राण वनिजतव वचन न आज ॥ २१५ ॥ झाँझरि हैं यह नइया परि मझधार । लागहु लाल गोहरिया करहु उबार ॥ २१६ ॥ नेह जरावत जियरा छिन २ जात । कढ़त पापी केहूं पगि पछि तात ॥२१७॥ तब ये पापिनि अँखियाँ आगे जाय । वे ललन कर मनवां रोवति हाय ॥२१८॥ अब जनि मोहि तरसावहु दरसन देहु । स्वकर सीस मम परसहु सहित सनेहु ॥ २१९ ॥ लगन लगत सुख उमगउ समुझि सुभागि दहत देह दिन रतिया अब विरहागि ॥२२०॥ बरसत कारे मेघवा गरजत घोर । बिन लालन तन पर से बढ़ा

मरोर ॥२२१॥ जेहिमा सभा नेहवा विरहा धाम। भेल लोग सब लुकवा कहुन अराम ॥ २२२ ॥ लाल दरस तरु छंहियाँ सीतल बात। पियती रूप सलिलवा हरखतु गात ॥ २२३ ॥ यह फूललि फुल वरिया कौने काज। जहां न लाल भंवरवा विहरत आज ॥२२४॥ तब यह वन, अमरैया सीतल लागि। बिनु लाल न अव दारुन भइलि दवागि ॥ २२५ ॥ यह मोरवाकी कुहकनि महकनि फूल। बिनु लालन सर सावति हियरे शूल ॥ २२६ ॥ सरिसर पुलिन कि छरवा गह वर सानु। विनु प्रीतम लखि लागत मनहुं कृसानु ॥ २२७ ॥ सरदि रैनि बिधु बरसनि अमृत धार। विना ललन तन झर सत मनहं अगार ॥ २२८ ॥ कुंद कदंब कमोदिन विमल विकास देत दाह लखि दारुन अफुलित कांस ॥२२९॥ बेला वेलि चमेलिनि विपुल बितान। सूने लगत मया वन विनु प्रिय प्रान ॥२३०॥ पुलिन २ छवि छहरत विपिन विकास। सेत रेणु मृदुजल रुह हरत हुलास ॥२३१॥ राग रङ्ग नव नागरि नागर खास लगत न प्यारे पिय बिनु धरनि अकास ॥ २३२ ॥ सरजू पुलिन सुहावन पावन देस। बिनु प्रीतम सुख देखे देत कलेस ॥ २३३ ॥ दोन माल मणि मुक्तन अमल अवास सुने से सब सेस बदो सत पिय विनु खास ॥ २३४ ॥ है मनि हिमि मनि मन्दिर नगर निवास। लगत न नीके पिय बिनु बिगत हुलास ॥ २३५ ॥ सहचर सहचरि संगी सुहृद अवास। लगत न नीके फीके विपुल बिलास ॥२३६॥ सदै रहत संग पीतम नहीं देखात। यह अचरज निसि बासर गुनतहि जात ॥ २३७ ॥ यह बंसत सब लोगन अति सुख देत। विरह दवागि हलाहल करत अचेत ॥२३७॥ नवल तरुन तरु पल्लव सुमन पराग दंत

सकलतनु पिय बिनु अनुपम आग ॥२३९॥ पीत रंग मय चहुँदिस सबहि सोहात । मोहि पीतम बिनु बिलपत रैनि सिरात ॥२४०॥ धावत गावत खेलत मेलत लोग । मो तन दुख सरसावत विषय वियोग॥२४१॥ वेत्त ॥ नमो नील मेघाभश्यामं प्रकामं । तडिन्मालया सीतयाशोभिवामं । अशोकाटवीमध्यकुञ्जेभिरामं । सखीना समूह स्मरे सर्वरामं ॥ २४२ ॥ मुदा वीणया राग मालाँ रटन्तं । यदा सीतया कण्ठ लग्ने नटन्तं । शरन्नै शिको रात्रि मध्ये लसन्तं । प्रपश्ये मुदानर्म मिःसंहसन्तं ॥ २४३ ॥ तड़िन्नीलवस्त्रं सुचित्रं विचित्रं । सदा धार्य मानं पवित्रं समित्रं । प्रमोदाटवी केलिदक्षं सुरक्षं । नमो नृत्य राजानमीशं यथेच्छं ॥ २४४ ॥ मत्ते चश्म मेरे लगे यार में । न छूटैं छुड़ायें पगे प्यार में । करी खूब जुल्फैं जुलम जोर हैं उन बिन न मुझको कहीं ठौर हैं ॥ २४५ ॥ हुई इस तरह जो मेरी हवाल । सभी जग जलूसैं लगै ज्वाल जाल । थका मैं जतन कर न मानै अजार । लगी इश्क बाजी हुई क्या बहार ॥२४६॥ तेरे इश्क के जोस के रोस में । नहीं चैन मुझको कहीं होश में । तुही फिरके आवै जिलावै मुझै । तेरे याद में खास जावै मुझै ॥ २४७ ॥ हमेसः इसी इश्क में गर्क था । न हम से व तुमसे कहीं फर्क था । गुजरती सुबू शाम अफ़सोस में । न देखैं कभी ख्वाब वे होस में ॥ २४८ ॥ तेरे जुल्फ के कुल्फ में दिल फंसा । तेरे हुस्न फाँसी में मैं हूँ फँसा । हुये हुस्न आशक हज़ारों किसान । करोड़ों अज़ीमत पढ़ैं हाफ़िज़ान ॥ २४९ ॥ लगी जोर आतश व बुझती नही । न सूरत कोई जान बचने सही । अजब रूप तेरा है जाहर जहान । न देखे रहै जान जाहिल जवान ॥२५०॥ ग़ज़ब सान साही है तेरी नज़ीर । हुए

हुस्न आशक करोड़ों फ़क़ीर । फिरैं गर्क बन बन में छोड़े मुकाम । फ़क़त फ़िक्र तेरे भये ये गुलाम ॥ २५१ ॥ तलबदार केते है तालब देवान । हुए कत्ल केते चले आसमान । परे जाके केते सुलेमां के तख्त । हुए जाके केते सितारे वनख्त ॥ २५२ ॥ केते को परे जुल्फ़ कुल्फों के फंद । जजीरों जड़े इश्क जाहल में बंद । करें कद्म बोसी व खिदमत अनेक । न लाते हैं जीमें व फरसत दरेक ॥ २५३ ॥ सदा आपकी खूबसूरत पनाह । निगाहे न चाहैं और आलम अगाह । तड़पते परे कत्ल केते जवाँ । बुजुर्गी के नुख्तो की धरके कमाँ ॥ २५४ ॥ तेरे जुल्फ खंजर पै गिर गिर परै । हुए कुर्बानबिस्मल ज्यौंबुलबुल मरै । तेरी जुल्म जादू ये लब की दमक । करतो होश सायब सब इसको गमक ॥ २५५ ॥ न जानै तुझै वो भी खस्ते खराब । अपाने जिगर से भिवन्ते नवाब । कोई पातसाही के फिरते गरूर । खता खाक गिरते हैं वो भी जरूर ॥ २५६ ॥ फ़कीरी करै इल्म पूरें जहान । गिराते पहाड़ों को अपने कमान । जमामर्द खासे पछाड़ै जे फोल । जलूसी जवां जर्व जाहल जफील ॥ २५७ ॥ तेरे चश्म खंजर से कटते तमाम । न बचते कोई फर्द पड़कै इमाम । तुझें छोड़ि फिरता वही बे सहूर । जिसै सान साही व हो चूर चूर ॥२५८॥ तुही साहिजादा तुही पातसा । तुही सानसा है तुही है रसा । तुही है कवीरो तुही है खुदा । न तुझसे न मुझसे कधीं थी जुदा ॥२५९॥ तुही है इलाही तुही है रहीम । तुही जान दुनियाँ कहेगा रहीम । तुहीने बनाया ये आलम तमाम । नजर में न आता क्या हैगा कलाम ॥ २६० ॥ कुरानौ पुरानौ बे वेदौक जान । तुही एक न्यारा है प्यारा जहान । तेरे एकवालौ में

लाखों जहान । निगाहों के मुझ पर चला दे कमान ॥ २६१ ॥ तुही को मैं पूछूं और खोजूं जहान । तेरे रङ्ग सारा लाखूं आसमान । व तख्त वे वख्तक तू है सहा । गुरते सवौ येक तूही रहा ॥ २६२ ॥ तुही जोर जालम तुही है कमाल । जगत खेल सारा ये तेराहि ख्याल । तुही पार लाने का सायर जहाज । मुझे क्यों डुबाता तु शायर दराज ॥२६३॥ न छोड़ूंगा तुझको न तेराहि नाम । अरूझि तेरी राम मूरति ललाम ॥ तुही शाहिजादा है सूबे अवध । न तुझसा कोई खास सबू का अवध ॥ २६४ ॥ बेदरदी मेरे वार होकर दयाल । सताते न लाते कलेजे रसाल । हुआ मैं दिवाना तेरे द्वार यार । हमारे तुम्हारे गुजरते क़रार ॥२६५॥ पड़ा क्या जमाना ये मुझ पर सनम ॥ सितम कर मुझै आप बैठे हो बेगम । तुही सिर्फ़ मेरा है मालिक कमाल । तुझै छाड़ि मुझ को ये लगता जवाल ॥ २६६ ॥ मेरे चश्म में आय कै तू रहै । मेरे संग खेलै जो दिल में चहै ॥ न तुझ को मेरी याद आती सनम् । जुलम है जुलम है जुलम है जुलम ॥ २६७ ॥ कवित्त ॥ कोई देव राजी कोई संतन समाजी खास विज्ञ सिर ताजी कोई साजे बाजि राजी है । कोई काम काजी जिन्हें देखे भूप राजी होत संपति दराजी कीर्ति जिन की विराजी है ॥ प्रीति रीति न जी पै ये ज्ञान ध्यान जागे जाती राजी जीति ताजी गाजी हाजी जे मिजाजी है । सीताप्रसाद इश्कवाज़ी की न वाजी वाजी येती साज साजी पै पाजिन ते पाजी है ॥ २६८ ॥ लोक वेद वाना जौन सज्जन बखाना सब मेरे मन माना आस भास को मिटाना है । बनिके दीवाना खूब जग में संसाना यार प्यार को बढ़ाना यह ठीक ही ठिकाना है ॥ सीताप्रसाद मौज

जालिम जमाना करि प्रेम पंथ आना राग रंग में समाना है। इश्क का निसाना मारि लाज काज फौज जारि डंका दै निसंक अङ्क प्यारे को लगाना है ॥ २६९ ॥ रसना कमान वैन वानन चलाय खूब रोकि दसौ द्वार दसौ मारु त्यों बजावैंगे। समर मचाय कै भगा रहे सुभट सारे रोम २ वेधि अँग हसैंगे हंसावेंगे। रन में कटाय तन धूरि में मिलाय आजु दैकर निशान यार तेरे पास आवैंगे ॥ आशिकी कमाय निज वाजिहीं जमाय प्रान जान हूं गमाय प्यारे हियरे लगावेंगे ॥ २७० ॥ लागो है सनेह तो सों भूलि गयो लोक औक सूरत तिहारो लोक चुँबक लौं लागो है लागो है सरसो सुगन्ध भरयो सीत पौन सीतल सलिल शोक राह तेल लागो है ॥ लागो है कुटुम्ब सब प्रेतन समूह ऐसो सुकवि सुवैन सेलगोलिन सो लागो है। लागो है विबुध समाज जमराज साज जौलौं प्रान प्यारे लाल उर में न लागो है ॥२७१॥ भसम रमाय तन चंदन बहाय वेगि खप्पर उठाय कर गोरखै जगावेंगे। जटन बढ़ाय जग खटक मिटाय सब तोही सो अटकि द्वार तेरे नाम गावैंगे ॥ तनहि मसान मन भूतहि जगाय करि सुरति विमान लेइ आज ही पठावैंगे। जो पै तुम मेरे पास ऐहौ नाहिं प्यारेलाल जोगी मतवारे ह्वै तिहारे पास आवैंगे ॥ २७२ ॥ तन ही को अम्बर कै अम्बर बघम्बर कै तरु तर मेघ डम्बर कै देह लौ बितावेंगे। दृग को कमंडल कै तोनों विधि नीर भरि इन्द्रिन जराय पंच धूनिऊँ लगावैंगे ॥ सुरति ही सूत मजबूत तत्त्व माल गूंथि ध्यान मुख मंडल दसौ शृंगिन बजावैंगे। दरस टूक पाय और जग सो हँसाय प्यारे तेरे द्वारे बैठि कै फकारी यों कमावैंगे

॥ २७३ ॥ डोलि २ गैलनि मैं बोलि २ नाम तेरो खोलि २ आस त्रास जगत को मिटावैंगे ॥ सरजू वन वागन में उमगि अनुरागिन मैं लागि लागि लागिन से धूरि सी उड़ावैंगे । खोरि २ दोरि २ पुलिन कलिन बीच अलिन नलिन धाय धाय कै सतावैंगे, आशिक कहावैंगे न आवैंगे किसी के काम सीताप्रसाद यार संग ही नचावैंगे ॥ २७४ ॥ गावैंगे तुम्हारे गुन ध्यावैंगे तुम्हारो रूप भावैंगे ओर भाव भेद ना मिटावैंगे । वान धनु धारैंगे सभारैंगे अपानो रूप भूलि भव कूप कीन चाह को बढ़ावैंगे । खेलैंगे अनेक खेल आप के सखान संग बसि कै प्रमोद कुञ्ज जंग हीं मचावगे । ऐ हो ना बुलैहौ जो हमेसे मोहि प्यारे लाल तोपै तोहि छोड़ि कै न द्वार औरे जावैंगे ॥ २७५ । त्यागि है न नाम रूप लीलाधाम तेरो राम मोक्ष पर धाम को न भूलि नेक मागि है । मागि है न लोक वेद धर्म भर्म जालन को तेरे ही चरित्र में सदैव अनुरागि है । रागि है न राग रग छोड़िकै तिहारो संग दृग जात रंग दृग तेरे रँग पागि है । पागि है न प्रेम पंथ छोड़ि कै कुपंथ और सान मान कानि कुल पाजिन को त्यागि है ॥२७६॥ ये हो प्राणप्यारे तुम भूलि कै हमारो प्यार अनत लुभाने कहुँ न्यारे काम काज मैं । काहे को अकाज मेरो राजन के महाराज देखत न आज है गरीबनिवाज में । संपति दराज तेरो रूप कोन पारा वार पूरन पियूष धार दानि सिरताज में । होत हो कृपिन काहे कोसला कुमार लाल लायक के नायक कुलायक समाज में ॥२७७॥ जानकी के जीवन हो जगत जकन राम ज़ालिम जबानी मोपै डारिगो जवाल है । भूलिगो तिहारो रूप धाइ गिरो अंध कूप सूझत न पार के हूँ लिखित

कपाल है । तेरे रोम राजिन विराजत अनन्त ब्रह्म रचत अखण्ड अंडकोस आल बाल है । तू तो कोसलेस तेरे रूप के अपार कोस भुवन अधार जीव पालन नपाल है ॥ २७८ ॥ सवैया । सुखसिंधु तुम्हें जग गावत है दुख सिन्ध में बोरत मोहि कहा है । तुम मीनन के मुददायक थे अब ऐसे सताबत जान दहा है। नित मान तिहारो हुतो जन पालन पातक कौन धौं वाय वहा है । अहो प्रान पियारे लला तुमसों कहौ नेह को नातो कहाँ निवहा है ॥२७९॥ आप वियोग घटा उनई जुनई दूब छई हरियाई । झुकि पौंन झकोरि चलै चहुँधा सुकुमार चकोरन की सरसाई । गाय रहीं नवला सवला मृदु वैननि नैननि सैन चलाई । नहिं चैन तुम्हें विनु लाल हमैं उर आनि लगो तजि कै निठुराई ॥ २८० ॥ विनु देखे लला मुख चंद छटा घन घोर घटा डरपावत है। बरसैं सरसैं तन को करसैं नहिं चैन कहूँ छिन पावत है। तब बोल निचालनि खेलनि मेलनि पीर हिए सरसावत है । अब सोय प्रसाद मिलौ उरसों वर सोवर सावन है ॥२८१॥ उत झूलत है नर नारि इतै हम तात वियोग के आगि जरैं । उत फूलि रहे बन बाग इतै हृदि कंजहु तास विनाहि बरैं । दिन राति न चैन इते हमको उत आनँद बूंद के पुञ्ज झरैं । बिनु लाल बिहाल फिरैं हम हाय उपाय न पावत काह करैं ॥ २८२॥ तुम राजि रहे सब पै सुख साजि बलाहक राजि दया उर आनो । कर जोरि करौं बिनती सुन कै कछु मेरे दसा को विथा पहिचानो । हौ जग जीवन दायक तात न बात वृथा सब भांति प्रमानो । मो दृग नीर लै लालन के पग धोवन को वरवा वर ठानो ॥२८३॥ हे जग जीवन धीर समीर सुपीर हरो हमरो तन केरो । नहिं जात

रह्यो वे हुँ भांति कहुं विरहागि दवागि चहूं कित घेरो। करि कोटि उपाय थके मन को नहिं चैन लखात कितो दिग हेरो। दृग मेरे भरो प्रिय पायन धूरि सुजोवन मूरि रहै थिर मेरो ॥२८४॥ मृदु तान सुनै धनुवान धरै रस पान करैं सुर सालन में। मृदु अँगन में सफ जंगम में सु उमंगन में सुख मालन में। लखि हैं अखियाँ पखियाँ छवि जालन कुञ्ज तमालन में। कब खेलहिंगे गहि के बहियाँ तरु की छहियाँ वन ख्यालन में ॥ २८५ ॥ कब देखहिंगे मुखचन्द छटा वन वागन फूल परागन में ॥ नव मल्लिन वल्लिन कुञ्जन पुञ्ज सुतीरन तीर तडागन में। वसि हैं रसि हैं लसि हैं कबही मिलि लालन वालि विलासन में। लखि सारदि इन्दु विकसन में रस रासन में सु हुलासन में ॥ २८६ ॥ द्रुत विलम्बित ॥ अवध लाल कृपाल कृपा करो अखिल भीति अनीति सदा हरो। अचल प्रीति प्रतीत मुदा भरो प्रमुद कानन केलि करा करों ॥ २८७ ॥ तब वियोग अपार समुद्र में मथत मोमन मंदर मुद्र में। खिल चित्त सु वृत्ति फणीव हैं सजन दुर्जनता सदा गहै ॥ २८८ ॥ मदन ग्राह महा तेहिमो वसै तव सनेह सुभक्ति झषै ग्रसै सकल विघ्न तहाँ जल जंतु से भयत है सब लोहद तंतु से ॥ ८९॥ दरस आस महा जल रासिकी उठति तुङ्ग तरंग हुलास की। सरस रूप सुओज प्रकाश की वढ़ति जोति सुरत्न प्रकाश की ॥२९०॥ अखिल रत्न सु प्रापति के लिए करत यत्न सवै चित यो दिए। मगन मदर अंदर में थक्यो चकि रहेन रहेन गहै वहै ॥२९१॥ तव मुखेन्द कला कमला कला सकल सिद्धि समृद्धि रसा कला। रासक वर्य्य भविष्यति सायदा सर्पदि बृद्धूत दैव गता हिंसा ॥ २९२ ॥ अचल राज सुरा सुर संपदा ह्याखि भीति हरा यदि जायते। निखिल रत्नचये पिन में

मतिस्तव मुखेन्दु विनैवन मे गतिः ॥ २९३ ॥ यदि भवेद्धि विरंचि पुरेगतिर्विबुध बृन्द शतेषु न मे रतिः । यदि पुन श्शिव विष्णु सुख सूतिस्तव मुखेन्दुविनै वन में गतिः ॥ २९४ ॥ यदि हसंति प्रताप प्रभा करा हखिल लोक सरक्षण लक्षणः । नहि भवन्ति प्रफुल्लित पंकजानि रवि नेव विनैवन मे रतिः ॥ २९५ ॥ सकल सिद्धि समृद्धि चयेन किंविधि हरीश पुरीषु सुखेन किं । यदि न त्वन्मुखकंज निरीक्षणं धिगिति सर्वमिदं सचराचरम् ॥ २९६ ॥ तव वियोग दिवाकर तापितो नहि कदापि क्वचित सुख मालभे । तव मुखेद्भव लोकन तर्पितः भवतु शक्र सहस्र सुखाधिकं ॥ २९७ ॥ यदि पलाश बने सकरीर के निवसनं प्रभविष्यतित्वत्समं अमित कोटि विकुण्ठ सुखाधिकं तव मुखेन्दु नरीक्षणतो भवेत् ॥ २९८ ॥ अखिल लोक पते करुणार्णव प्रणत पालन तारंन रघवं । मम मनोभव दुख निवारणं कुशिक नन्दन दत्त मखध्वर ॥२९९॥ मंजु छन्द । ज्ञान ध्यान वैराग्य जोग को देख २ कर हँसते हैं । धर्म कर्म पर लोक २ सुख सब पैरों से घसते हैं । इश्क चमन में जिलह साजि हम कमरबन्द दिल कसते हैं । सदर कचहरी अवध सहर के दरवाजे पर बसते हैं ॥३००॥ कड़ा बीन तलवार तमंचे सेर बचे हम वहते हैं । लखन लाल के सखा कडक्के धक्के कभी न सहते हैं । वन प्रमोद के कुञ्जन२ राम रास रस चहते हैं । बने फकीर अमीर औध के जौक सौक से रहते हैं ॥३०१॥ ले जम्वाने पट्टि सगुद्गर हरदम दिलसे करते हैं । गजीफे सतरञ्ज वगैरह खेलि २ दिन भरते हैं । चढ़ि तुरग सफजंग सेर हम सखन संग मन धरते हैं । सीयप्रसाद न ख्याल और अब फिर२ जी जां मरते हैं ॥३०२॥ बाग २ अनुराग लाग कर प्यार यार का करते हैं । स्वर्ग नर्क अपवर्ग २ सब कभी न

दिल पर धरते हैं। अवध सहर के गलिन गलिन मैं हुये दिवाने फिरते हैं कौन हमारा करें बराबर नहिं कालहु से डरते हैं। ३०३ ॥ दोस्त हमारा छैल छबीला अवध छैल मतवाला है। गोरा गरवीला अरबील छटा छरंगी वाला है। धनुसर धारी बिपिनि बिहारी पियै प्रीत का प्याला है। सीय प्रसाद येक वह मेरा और जगत क्या साला है ॥ ३०४ ॥ राज माधुरी पियैं हमेसः राज महल अधि कारी है। सरजू तीर विहार वहारन रहै सदा ब्रत धारी है। मृगया रास विलास विलो कनि ललन संग बन चारी है। सीय प्रसाद प्रसाद सीय के अचल सख्य मुदकारी है ॥३०५॥ स्याम सलोना वसै नैन में गारा प्यारा मौर है। मैं उस्का हूं छोटा भैया वहीं सदा ही फेरा है। रतनां चल सरजू तट कुंजर रहै हमारा डेरा है। गज तुरंग चढि राज खेल में हर दम सुबूं सवेरा है ॥ ३०६ ॥ हर दम मजह हमेसः हमको हाजिर हो सत मामी है। यार प्यार के जोस रोस में दुनियाँ की इतमामी है। लोक लाज मरजाद सृङ्खला ये सब मिटै मुदामी है। फिकर गुजार एक लालन पर मन मेरा बदनामी है ॥ ३०७ ॥ नृत्य राघवी समर वांकुरे हाजिर सुबह सुनेरे है। नर्म सुहृद प्रिय सखा अनेकन विविध भेद तिनकेरे है ॥ मेरे दोस्त हमेशः अविचल रामलाल के चेरे हैं। अवध शहर के सदा वसैया नहिं माया के फेरे हैं ॥ ३०८ ॥ राज लाड़िले कुंवर सलोने सवै प्रेम मतवाले हैं। गर्क सदा श्रीराज माधुरी पिये प्रीति के प्याले हैं। राम स्याम के छटा छके नित मगन मौजरस ख्याले हैं। सीयप्रसाद मधुर रस लोभी सरजू वृंजन वाले हैं ॥३०९॥ सोरठा ॥ कबहूं विपति वियोग, विबस रहत नहिं चैन चित। कबहूं हर्षसुशोग, वक तक लकाहुँ गेल

निश ॥३१० ॥ यह विधि विरह प्रमोद, हात रहत निशिदिन उभै । अद्भुत इश्क विनोद, इश्क विना नाहिन मिलत ॥ ३११ ॥ चौबोला ॥ सिथिल रसना भई रटि रटि भये मूर्छिजु अंग । महा निद्रा आई छाई भइ मति गति भंग । लखन लाल कृपाल सों नहिं गयो सहि मम पीर । पोंछ रज तन सीस धरि कर कह्यो बचन गंभीर ॥ ३१२ ॥ लखहु आपनो रूप भ्रम तजि भजहु श्री रघुबीर । लहहु अनुदिन मोद अनुपम सुगम यही शरीर स्वप्न में लहि प्राण प्रिय निज तज्यो निद्रा रूप पेखि चिन्मय रूप अपनो स्वयं ज्ञान स्वरूप ॥३१३॥ वर्ष षोडश (१६) वान अद्भुत सिरि तन अध्यास । झकि लाग्यो तकन इत उत मगन प्रेम पियास ॥ कहाँ मैं हूं कौन वन में करत हौं का काम । कहाँ मेरे इष्ट शिव जी कामदेश्वर नाम ॥ ३१४ । कहाँ कोशल देश अनुपम अवध सरजू तीर । कहाँ पूरन प्रेम कारन प्रमुद वन गंभीर । कहाँ कोकी कीर कोकिल कमल काननराजि । कहाँ नित्य बिहार थल भल गोप गोपि समाजि ॥ ३१५ ॥ इष्ट शिक्षक लखन मेरे सखा रघुकुल लाल । स्वामिनी कह सिया जू है सखी निमि कुलवाल । कहाँ मेरे तुरँग रथ गज कहाँ कवच सनाँह । कहाँ मेरो बान धनु सर खड्ग तर्कसवाह ॥ ३१६ ॥ कहाँ भूषन वसन मेरे क्रीट कुण्डल कान । कहां मेरे सखागन सब परम जीवन प्रान । भरत रिपुहन वीरमणि कहँ कहां लछिमन लाल । कहां प्यारे बड़े भया रामलाल रसाल ॥ ३१७ ॥ कहां अँवा कोसला हैं कहं सुमित्रा माय कहां जननी कैकेई है सहित कुबजा धाय ॥ कहां नृप मणि मुकुट दशरथ वृद्ध मेरे तात । वीरसिंह प्रताप निधि कहं कहां सब मम मात ॥ ३१८॥ कहाँ परिजन प्रजा सिगरै कहाँ गुरू वसिष्ट । कहं सुयज्ञ सुमित्र

मेरे सकल गुणान गरिष्ट ॥ कहाँ चित्र विचित्र चिन्मय वन प्रमोद ललाम । विमलादि सखिगन कहाँ प्यारी वास थल विश्राम ॥ ३१९ ॥ कहां सरजू प्रेम धारा करन पूरन काम ॥ रत्नगिरि कहँ सोमवट तट मणिन मय कह धाम ॥ कहाँ गोपी गोप गोगन कहाँ बछरन वृन्द । कहाँ घाट सुवाट वृज भुवि कहां नंदिनि नन्द ॥ ३२० ॥ कहाँ गोपन प्रति सुखित कहं सुमांगलि माव । सहित गोगन गोपवालन रत्न सानुसहाय ॥ कहां गह्वर कुञ्ज सहजा केलि भूमि अनूप ॥ अमल चिंतामणि रसिक जन रमण धान सरूप ॥ ३२१ ॥ कहां श्री मन्मध्वस्वामि कपीन्द्र मारुतनन्द श्रीमद्सिष्ट सु तीर्थ निरमल सुमति करुणा-कन्द ॥ कहाँ राम सखेन्द्र निधि प्रभु श्री सुसील समेत ॥ शील प्रेम सुचित्र निधि पुनि कहाँ सकल सहेत ॥ ३२२ ॥ बहुरि रामप्रसाद निधि श्री अवध शरण समेत । रसिक बल्लभ शरण मम प्रिय सखा शील निकेत ॥ अवध बल्लभ शरण रघुवर शरण अवध सुरंग । सहित कामद मनि सुश्री मणि मित्र मेरे अङ्ग ॥३२३॥ दोहा—यहि विधि उत्कंठा बढ़ी, भयो सकल भ्रम भंग । सियप्रसाद उर उमँग को, उमड़त प्रेम तरंग ॥ ३२४ ॥ यहि विधि जो लागी रहै, प्रीय मिलन की आस । छूटे दुख सब सुख बढ़ैं, तजै न प्रिय छन पास ॥ ३२५ ॥ निसि दिन जो लागी रहै, निज प्रीतम की आस । भक्ति ताहि मुनिवर कहत, यह सिद्धान्त प्रकाश ॥ ३२६ ॥ ध्यावै जैसो भाव करि, पुरवत ताको तौन । कोशल पाल कृपाल तजि, भजिवे लायक कौन ॥ ३२७ ॥ भक्ति महातम मुनिप नित, श्रुति पुरान सिद्धान्त । धरै धारणा सुदृढ़ ह्वै, बैठि कहूं एकान्त ॥३२८॥ प्रीति कहानी सुने बिनु, प्रीति न जानै कोय । प्रीतिहि ते प्रिय मिलत है, जब मन

निर्मल होई॥३२९॥जनम अनेकन सों लग्यो मुरचा विषय प्रवाह। इश्क सान धरि मेटिये, धोइ राम रस चाह । ३३० ॥ घन आनन्द कल्यान कवि, बोधा ठाकुर आदि । रसिक लाल वल्लभ रसिक, कामद मणि रस स्वाद ॥ ३३१ ॥ श्री मद्युगुला नन्य श्री सिय वर शरण समेत । श्री विदेहजा शरण शुचि, सहित सु प्रेम निकेत । ३३२ ॥ शुद्ध प्रेम के पात्र ये, विषय रहित रस स्वादि । इनके ग्रंथन निरख कर, साधै इश्क अनादि । ३३३॥ छन्द रोला भाख्यो सीयप्रसाद आशकी अपने मनको । तजि सत असत विचार इश्क जोरा या तन की ॥ याको इश्क विनोद नाम कीनो उल्लासा ॥ वाँचत उपजै प्रीति होय जाकी दिल खासा ॥ ३३४ ॥ मैं मतिमन्द विशेषि छन्द को रीति न जानी । मात्रा अक्षर अर्थ अलंकृति भ्रष्ट बखानी ॥ रस विशेष नहि ज्ञाति काव्य काव्य में नाहि न बोधा । ताते छन्द प्रबन्ध कछुक नहिन मैं सोधा ॥ ३३५ ॥ यह है इश्क विनोद इश्क बाजन सुख कारी । नहिं जानत जे प्रीति रीति नहिं ते अधिकारी । वसु (८) धिय (२)निधि (९) विधु (१) पौष शुक्ल सम्बत् १९२८ सिव पाई । निज मनको उल्लास कजक सछेप बनाई ॥ ३३६ ॥ दोहा सरजू तट खाके तलखि, कुञ्ज महल

इति श्रीमन्मध्वकुलावतंस श्री मद्रामसखेन्द्र निम्बार्काचार्य्य वंशोद्भव श्री मद्रामप्रसाद शिष्येण सीताप्रसादेन विरचितायाँ परमानन्दार्णवे इश्क-विनोद निरूपणं नाम प्रथमस्तरंगः ॥

श्री सीतारामापूर्णं मस्तु ॥

—०—

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
1524
अयोध्या
श्री मणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट